वर्ष—21 अंक—2

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक देवस्वरूप परमात्मा को हम अपनी अन्तरात्मा में धारण करें। परमात्मा हमारे बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें।

अखिल भारतीय स्तर की उच्च कोटि की त्रैमासिक पत्रिका

हैहयवंश जनवाणी

श्री राजराजेश्वर सहस्त्रार्जुनाय नमः

अखिल भारतीय हैहयवंशीय क्षत्रिय केन्द्रीय संचालन समिति (पं.)

Website : http://www.haihaivanshiya.com, facebook : Akhil Bhartiya Baihaivanshi kkss

अध्यक्ष / कार्यालय	उपाध्यक्ष	महासचिव	कोषाध्यक्ष
सेवाराम 'अमर'	विपुल कु0 वर्मा हैहयवंशी	आर.बी. प्रसाद हैहयवंशी	नन्दलाल कसेरा हैहयवंशी
ए—18, गुरुरामदास नगर	443, गली शीश महल	मकान नं.—बी—59, सेक्टर—15	46/3 बी, मेन रोड, ईस्ट आजाद
लक्ष्मी नगर, दिल्ली—92	सीता राम बाजार, दिल्ली—6	नौएडा, उत्तर प्रदेश	नगर, कृष्ण नगर, दिल्ली—51
मो.: 9717553592	मो.: 9313350597	मो.: 9818413553	मो.: 9871765693

हस्तशिल्प श्री पुरूषोत्तम दास जी के द्वारा हुमायुँ मकबरा का गुम्बद का निर्माण का चित्र

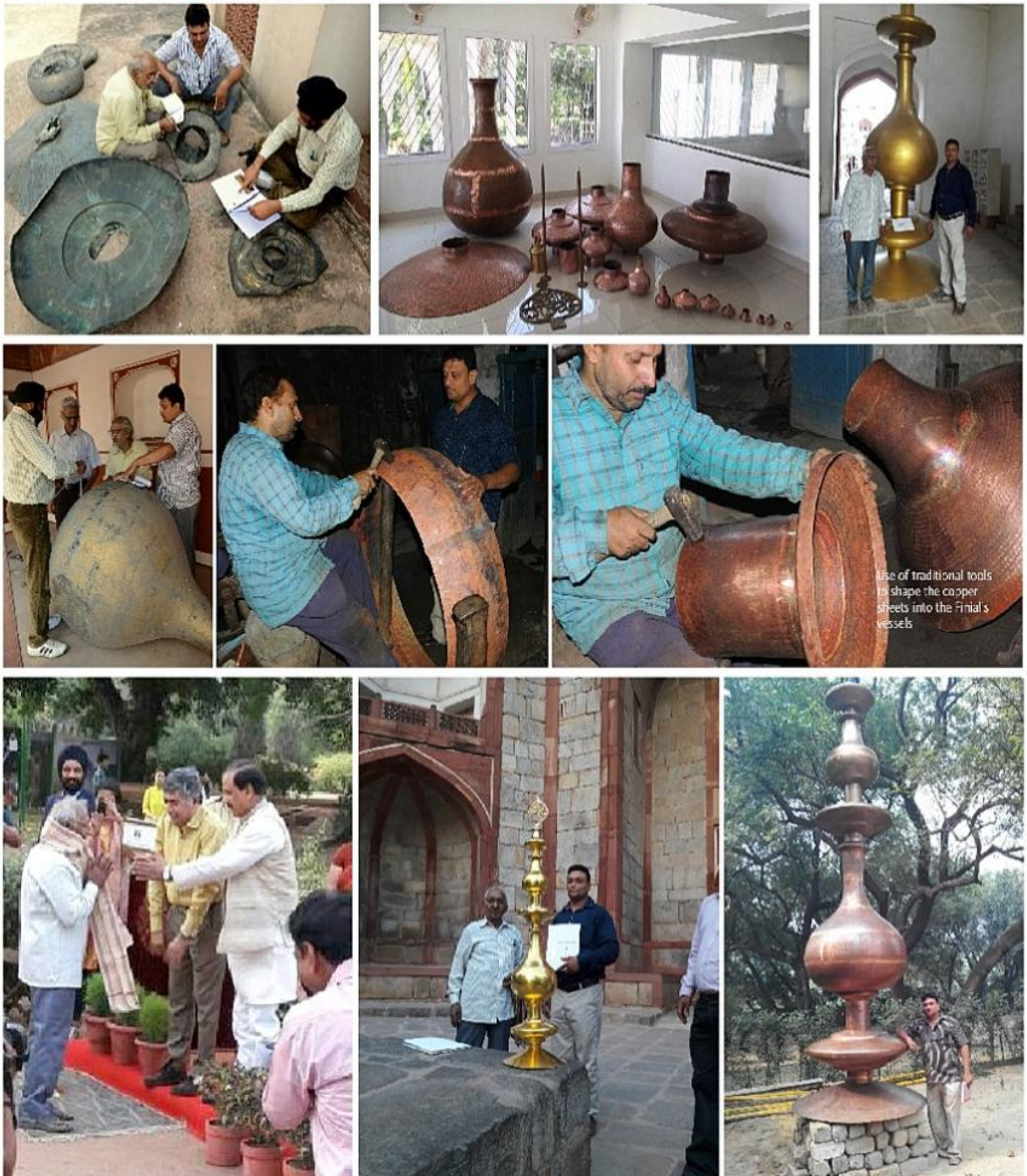

अखिल भारतीय हैहयवंशीय क्षत्रिय केन्द्रीय संचालन समिति (पं.)

वर्ष 21

विषय सूची

अंक -2

क्रम संख्या	लेख	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	श्री सेवा राम अमर	2
2.	संदेश	श्री विपुल कुमार वर्मा	3
3.	सुसंतान प्राप्ति के लिए आवश्यक ज्ञातव्य	स्व. श्री ओमप्रकाश वर्मा	4
4.	हैहयवंशी समाचार	श्री विपुल कुमार वर्मा	6
5.	हुमाँयु का मकबरा	श्री विपुल कुमार वर्मा	7
	भगवान अवातर के रूप में क्यों आते हैं?	श्री ओमप्रकाश कसेरा	7
6.	आलस्य–इन्सान का निकटवर्ती शत्रु	श्री विपुल कुमार वर्मा	8
7.	हैहयवंशियों से ठठेरे होने का प्रमाण	श्री विनोद शास्त्री	11
8.	फोटोग्राफी व फोटोपत्रकारिता	श्री विजय वर्मा	12
9.	श्रीमद् हैहयवंश कथा	स्व0 डॉ0 भैय्या ताम्रकार	13
10.	मदर्स डे	श्रीमती आरती वर्मा	17
11.	गोत्र, उपगोत्र व अल्ल	श्री पुत्तू लाल वर्मा	19
12.	अ.भा.है.क्ष. केन्द्रीय संचालन समिति (पंजी.)–		21
13.	शुभ विवाह समाचार	–	24
14.	विवाह योग्य जीवन साथी	–	25
15.	विशेष सूचना	–	26
16.	सादगी का पाठ	श्री शिवचरण वर्मा	27
	स्माइल प्लीज	श्रीमती शिखा वर्मा	27

संस्थापक – स्व. श्री जय कृष्ण वर्मा एवं स्व. श्री ओम प्रकाश वर्मा

संरक्षक – श्री श्याम लाल मोटे

संपादक – श्री सेवा राम अमर एवं श्री विपुल कुमार वर्मा

संपादक सहयोगी मण्डल – श्री शिव चरण वर्मा, श्री नरेश कुमार वर्मा एवं श्री विजय कुमार वर्मा

मूल्य : ₹ 10/–

सम्पादकीय

त्रोतायां मंत्रा शक्तिश्च सत् शक्ति कृत युगे।
द्वापरे युद्ध शक्विश्वः संघशक्ति कल युगे।।

अर्थ : सतयुग में सत् की शक्ति का प्रयोग होता है और त्रोता युग में मंत्रा की शक्ति से कार्य बनता है और द्वापरयुग में युद्ध शक्ति काम में लाई जाती है और कलयुग में संग शक्ति अर्थात् संगठन की शक्ति का प्रयोग किया जाता है, तभी सफलता मिलती है।

जिस जाति में संगठन शक्ति है वह दुनिया की दौड़ में सबसे आगे है। समाज के प्रेमी बन्धुओं उठो संगठन के साथ उठो। संगठन बनाओ, तभी तुम्हारी जय होगी। आप लोगों को एक दूसरे से जोड़ने तथा विभिन्न ज्ञान, विज्ञान, अनुभवों की जानकारियों को आप तक पहुँचाने का प्रयास ही इस पत्रिका का उद्देश्य है। संगठित समाज को ही सभी तरह से मान्यता मिलती है। ग्रामीण स्तर से लेकर जिला, प्रदेश व केन्द्रिय संगठन से सम्बंधित होकर ही अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। हमारे समाज में अभी चेतना जागी है और धीरे–धीरे सारे देश में चेतना फैलेगी। इस सम्बन्ध में हमें बच्चों की शिक्षा और अपनी जीविका पर विशेष ध्यान देना होगा।

शिक्षा : बच्चों के शिक्षा स्तर पर विशेष विचार करना होगा। शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करें और शिक्षा का स्तर ऊँचा उठायें। शिक्षा व अनकूल घर का वातावरण बनायें। आर्थिक अभाव इसमें बाधा हो सकती है इस बारे में स्वयं परिश्रम करें, सरकारी योजनाओं और उन संस्थाओं की जानकारी हासिल करें जो गरीब व प्रतिभाशाली बच्चों की आर्थिक सहायता करती है। बच्चों के प्रति जागरूक रहें। बच्चों का पढ़ा–लिखा कर योग्य बनाने की जिम्मेदारी माँ–बाप की ही होती है।

जीविका : जीविका के साधन–नौकरी, व्यवसाय और कारीगरी है। अच्छी नौकरी के लिए उच्च शिक्षा आवश्यक है या बच्चों को ऐसे परिक्षण या पाठ्यक्रम करवायें जो जीविका के निर्धारण करने में सहायक होते हैं। बच्चा एक आधुनिक कुशल कारीगर बनेगा और अच्छी जीविका कमाने में समर्थ होगा। बच्चे जबतक सेवायोजित नहीं हो जाते तब तक उनका भविष्य निर्माण के लिए निरन्तर मार्गदर्शन करना होगा। व्यवसाय में हमें समय की आवश्यकता अनुसार परिवर्तन करते रहना होगा और एक कुशल व्यापारी की विषमतायें प्राप्त करने की क्षमता रखनी होगी। व्यवसाय में कुशलता पाने के लिए भी शिक्षा और अनुभव आवश्यक है। जीविका के अनुसार ही घर का रहन–सहन व स्तर हो जाता है। घर के वातावरण और घर के लोगों से बातचीत से ही मालूम हो जाता है कि घर का स्तर कैसा है। हम अपने और बच्चों के भावी जीवन का निर्माण और पहचान बना पायेंगे। और समाज की उन्नति की ओर अग्रसर होते रहेंगे। उन्नति में ही संगठन शामिल है।

सेवाराम अमर हैहयवंशी
(अध्यक्ष)

सन्देश

परम् स्नेही बन्धुवर,

सादर अभिवादन,

"हैहयवंश जनवाणी" पत्रिका आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है, आप सब के दिये गये सुझाव पत्रिका के प्रकाशन में काफी प्रेरणा प्रदान करते हैं। इसी प्रेरणा के बल पर पूरे परिश्रम व लग्न से नवीन जानकारी युक्त पत्रिका हम आप तक पहुँचा रहे हैं। फिर भी हम अगर आपकी अपेक्षा के अनुरूप नहीं कर पाये हों तो अर्न्तमन क्षमा प्रार्थी है, मैं तहदिल से आपके समस्त परिवार, मित्रों व सहयोगियों के उज्जवल व स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ।

अन्त में विज्ञापन दाताओं से अनुरोध करता हूँ कि वो अपना सहयोग सदा बनाए रखें, जिनके विज्ञापन सहयोग के बिना पत्रिका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सकता है। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनके व्यापार, विज्ञापन, पत्रिका में छपने से उनके व्यापार में दिन दुगनी, रात चौगुनी प्रगति हो।

इस संस्था के सभी सदस्यों द्वारा दिए गए अपार समर्थन के लिए कोटि–कोटि धन्यवाद एवं हार्दिक शुभकामनायें तथा बधाई।

सदैव आपके लिए तत्पर
विपुल कुमार वर्मा हैहयवंशी
उपाध्यक्ष

गीता सार

जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है।
जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो ?
तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? जो लिया, यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया।
खाली हाथ आये, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है,
कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा।

सुसंतान प्राप्ति के लिए आवश्यक ज्ञातव्य

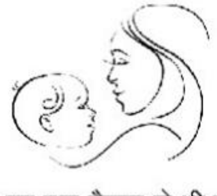

महाराजा दशरथ को जब पुत्र की इच्छा हुई तो कुलगुरु वशिष्ठ ने स्वयं शृंगि ऋषि से मिलकर उन्हें आमंत्रित करने के लिए महाराजा दशरथ को सलाह दी थी। महाराजा दशरथ शृंगि ऋषि के पास गये तथा उनसे अनुरोध किया कि हमें पुत्रेष्ठि यज्ञ कराना है। शृंगि ऋषि के बारे में पाठकगण जानते होंगे कि वे ब्रह्मचारी थे व नारी के शरीर की संरचना से भी अनभिज्ञ (स्थूल रूप से) परंतु शृंगि ऋषि ने महाराज दशरथ का अनुरोध स्वीकार कर, आध्यात्मिक तत्वज्ञान के माध्यम से शुभ तिथि एवं शुभ घड़ी में योनि के आकार का हवन कुंड की संरचना कर पुत्रेष्ठि यज्ञ सम्पन्न किया। उसके बाद क्या हुआ सबको विदित है। जिस मुख्य उद्देश्य को लेकर यह बात संक्षेप में यहाँ दोहराई जा रही है :–

(प्रथम) विशिष्ट उद्देश्य पूर्ति के लिए उस स्तर के व्यक्ति को तलाश करना – सम्पर्क करना तथा अनुरोध कर आमंत्रित करना। क्योंकि सामान्य यज्ञ तो उनके कुल गुरू वशिष्ठ सम्पन्न करा सकते थे परंतु पुत्रेष्ठि यज्ञ के लिए उन्होंने शृंगि ऋषि को ही क्यों चुना, क्योंकि शृंगि ऋषि ही इस विद्या में निष्णात थे।

(द्वितीय) शृंगि ऋषि की अपनी तपस्या थी उनका अपना चिंतन चरित्र व्यवहार था। जिनके कारण शृंगि ऋषि को इस उद्देश्य प्राप्ति के लिए उपयुक्त व्यक्ति समझा गया।

परन्तु आजकल क्या हो रहा है ? आपने देखा हो या न देखा हो परंतु अक्सर देखा कि आम पंडित जब भी कर्मकाण्ड जैसे यज्ञ, या सत्यनारायण की कथा करने आते हैं तो वे पान वह भी 101 नम्बर के तम्बाकू को चबाते रहते हैं और वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे होते हैं। मित्रों यह है हमारे पंडितों की, वेदमंत्रों के प्रति श्रृद्धा–भावना। कर्मकाण्ड में दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं (1) मंत्रों का उच्चारण (2) मंत्रों के शब्दार्थ के अनुसार वैसी भावना–विचारणा। जिस प्रकार बन्दूक तथा बन्दूक की गोली। बिना बन्दूक के गोली निरर्थक तथा बिना गोली के बन्दूक निरर्थक। इसी प्रकार मंत्र एवं उसके अनुरूप भावना दोनों का युग्म होना आवश्यक है तभी हमें उसके सत्परिणाम मिल सकते हैं। अन्यथा नहीं।

पुरोहित की तुलना हम एक वैल्डर से भी कर सकते हैं। वैल्डर धातुओं के टुकड़ों को जोड़कर एक नई कलाकृति बनाता है। उसमें तीन बातें ध्यान में रखनी होती हैं।

(1) **वैल्डर** – सोने चाँदी, पीतल व लोहे आदि की धातुओं के लिए अलग–अलग होते हैं। सुनार लोहे की धातु को वैल्ड नहीं कर सकेगा, इसी प्रकार लुहार सोने चाँदी की धातुओं को नहीं जोड़ पायेगा।

(2) **तकनीकी विधान** – लोहे की धातु को जोड़ने के लिए अलग तकनीक है तथा सोने–चाँदी, पीतल आदि के लिए अलग

(3) **वैल्डिंग मैटीरियल** – जैसी धातु को जोड़ना है उसके अनुरूप उससे कम गलांक वाली धातु आवश्यक है। इन तीनों में से अगर एक की भी उपेक्षा कर दी जाये तो हम कलाकृति नहीं बना पायेंगे।

उपरोक्त तथ्य का सारांश है कि एक तरफ जहाँ यजमान की पुरोहित के प्रति श्रद्धा, भावना, विश्वास, समर्पण है, महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी तरफ पुरोहित का सुचरित्रवान, प्रज्ञावान, सद्चिंतन करने वाला, मंत्रों का उच्चारण स्पष्ट मधुर शैली में बोलने वाला, कर्मकाण्ड को ठीक से विधि विधान पूर्वक शब्दार्थ–भावार्थ समझाते हुये सम्पन्न करने में निपुण होना आवश्यक है तभी हम कर्मकाण्ड का सही परिणाम पा सकेंगे अन्यथा –

जा की रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

तथा

रघुपति राघव राजा राम जैसा भाव वैसा परिणाम

अतः हमारा पाठकों से अनुरोध है कि विवाह एक पवित्र गठबन्धन है – एक पवित्र धर्मानुष्ठान है (जिसकी विस्तृत चर्चा हम अगले लेख में करेंगे) इसे समझते हुए – वर कन्या को समझाते हुये सम्पन्न कराना चाहिये ताकि दाम्पत्य जीवन उनका सफल हो सके – भविष्य उज्जवल बना सकें।

प्राचीन काल में जैसा हमने ऊपर विवरण दिया है कि – भारतीय संस्कृति में षोडश संस्कार का प्रचलन था। उसमें गर्भाधान संस्कार भी सम्मिलित था जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण है तथा उसके साथ–साथ गर्भवती स्त्री की देखभाल और भी अधिक महत्वपूर्ण है। भगवान राम ने, माता–सीता को उसके गर्भवती हो जाने पर महर्षि वाल्मीक के आश्रम में लालन पालन हेतु भेजा था। यह महर्षि वाल्मीक के आश्रम का कमाल था उसने ऐसी संतान, जो कि लव एवं कुश के नाम से जाने जाते हैं का निर्माण किया कि जिसने महावीर हनुमान जिसे रावण भी परास्त नहीं कर पाया, को भी बांधकर कैद कर लिया। इस प्रसंग को अधिक विस्तार से न कहकर असली उद्देश्य पर दृष्टि डालेंगे तो तीन चीजें महत्वपूर्ण दिखेंगी।

1. **परिवार के मुखिया** का दृष्टिकोण तथा परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग व समर्थन।
2. **गर्भवती स्त्री की मनः** स्थिति, उच्चसत्रीय संतान पाने की अटूट इच्छा, जो शिक्षा मिल रही है उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास समर्पण आदि।
3. **शिक्षक :** गुरुजनों का तपोबल, ब्रह्मबल, शिक्षण व्यवस्था, गुरुकुल का वातावरण, शिक्षार्थियों को समुचित देखभाल तथा सशक्त मार्गदर्शन आदि।

वस्तुतः जब बच्चा पेट में होता है तो परिवार का सारा वातावरण उसका शिक्षण करता है। विद्यालय में अध्यापक और प्रोफेसर कितने ही होते हैं, कोई कुछ पढ़ाता है कोई कुछ पढ़ाता है, लेकिन असली–वास्तविक प्रोफेसर वे लोग होते हैं जिनके सम्पर्क में गर्भवती को रहना पड़ता है। घर के लोग जिस स्वभाव के होते हैं, जिस तरह के होते हैं, जिस आचरण व चिंतन के होते हैं वही वास्तव में बच्चे के प्रोफेसर होते हैं। बालकों का शिक्षण एवं निर्माण की सारी–की–सारी जिम्मेदारियाँ माता–पिता की हैं।

जब तक बालक पैदा नहीं हुआ है, उससे पहले पोषक आहार के रूप में वे चीजें माता को देनी चाहिए जो सात्विक आहार के रूप में कही जा सकती है। माता के स्वास्थ्य की रक्षा करने का प्रयत्न उस समय करना चाहिये कि जब वह गर्भवती है। बालक के स्वास्थ्य की गारंटी इस बात पर टिकी हुई है कि गर्भवस्था में माता ने क्या खाया ? माता ने क्या पहना ? किस तरह की मनःस्थिति उसकी रही तथ कैसे वातावरण में पली? इस तरह की व्यवस्था बनाना बालक के पिता व अन्य बुजुर्गो की है।

बालक के निर्माण की जिम्मेदारी मात्र माता की ही नहीं है पिता की भी जिम्मेदारी है। अगर घर में क्षोभ का वातावरण है तो उसका सुधार करना उसको सुव्यवस्थित करना पिता का काम है। अगर गर्भवती को उचित आहार प्राप्त नहीं होता है तो उसकी जिम्मेदारी उसके पिता की है। बेचारी गर्भवती स्त्री किस तरीके से क्या–क्या कर सकती है ? घर के लोगों का स्वभाव अच्छा नहीं है, दूषित है, कलुषित है तो उस स्त्री को कहाँ रखा जाये या घरवालों को क्या कहा जाये ? स्थिति को कैसे सुधरा जाए, यह सोचना गर्भवती का काम नहीं है बल्कि उसके पति का काम है। बालक का निर्माण यहीं से आरम्भ होता है। उपरोक्त बातें सभी को समझनी चाहिये।

जब बालक गर्भ में हो तब उस समय पति–पत्नि का संयम भी महत्वपूर्ण है। उस समय वे भूल जाते हैं और समझते हैं कि कोई बालक भी नहीं हैं हम अकेले हैं – तरह–तरह के अश्लील क्रिया कलाप आपस में करते हैं। जो बातें गर्भवती स्त्री से नहीं की जानी चाहिए, करने लगते हैं। छोटा शिशु जो पेट में बैठा हुआ है उन सारी प्रक्रियाओं को सारी सम्वेदनाओं को ग्रहण करता हुआ चला जाता है और जब पैदा होता है तो उसमें कामुकता के सारे संस्कार पाये जाते हैं। बहुत छोट बच्चे, जिनको ठीक तरह से बोलना भी नहीं आता और दुनिया की जानकारी भी नहीं है, उन्हें काम–क्रिया की ओर अग्रसर होता पाया गया है। इसका कारण सिर्फ यही है कि वे सारे के सारे क्रिया कलाप उसने माँ–बाप के बीच होते हुए अश्लील व्यवहार के रूप में उस समय सीख लिये जब वह पेट में था।

जब जब बालक पेट में रहता है तब तक प्रत्येक पहलुओं से उसकी देखभाल करना अति आवश्यक है और महत्वपूर्ण भी।

स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश वर्मा हैहयवंशी
निवासी : वैशाली, गाजियाबाद
जन्म : 31.07.1943
मृत्यु : 09.12.2005

हैहयवंशी समाचार

श्री पुरुषोत्तम दास जी

श्री प्रेम नारायण वर्मा

श्रीमान् पुरुषोत्तम दास जिनका जन्म 15.07.1947 दिल्ली में हुआ पिता चौधरी दौलत राम और दादा चौधरी कल्लूमल अपने पुराने समय से ही पीतल और तांबा के अच्छे हस्त शिल्पकार रहें हैं। पुरुषोत्तम दास जी अपनी स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी करना चाहते थे लेकिन उनका रचनात्मक हस्तशिल्प के प्रति रुचि उन्हें अपने परम्परागत और पुशतैनी को आगे बढ़ाने के लिए अपने पिता का सहयोग देने लगे और अभी भी इसी काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

उन्होने अपने हस्तशिल्प कला का परिचय दिल्ली के विज्ञान भवन, दिल्ली मे स्थित कई दूतावास और राष्ट्रपति भवन में कई बार दिया। उन्होने सीलीगुड़ी मे स्थित इस्कॉन मंदिर के लिए तांबे के पिलर भी बनाये जिसकी ऊचाई 31 फीट और 27 फीट है लेकिन इस बार उन्होने वो ऐतिहासिक काम किया जो की पूरे भारत में पहली बार हुआ है और उन्हें इस काम के लिए दिनांक 19.04.2016 को डॉ. महेश शर्मा **(Hon'ble Minister of Culture Government of India)** ने सम्मानित किया। वो काम था, मुगल सम्राट हुमायू के मकबरा के गुम्बद का कलश जो कि 30 मई 2014 को आये तुफान, जिसकी रफतार 250 कि.मी. / प्रति घण्टा थी। 70 फीट ऊपर से गिर कर 16 वीं सदी पुराना कलश क्षतिग्रस्त हो गया। इस के पुनः स्थापित करने और इस स्मारक का जीर्णोद्धार के लिए आंगा खाँ सांस्कृतिक ट्रस्ट और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को दिया गया। कई हस्तशिल्प खोजे गये, आखिरकार अपने समाज के चावड़ी बाजार, दिल्ली – 6 के निवासी श्री प्रेम नारायण वर्मा जी (श्री चुन्नी लाल बसन्त लाल, पटियाले वाले) ने बताया कि श्री पुरुषोत्तम दास जी, जो कि अभी भी अपने हाथों से और पुराने समय से चली आ रही परम्परागत तकनीक से हस्तशिल्प का काम कर रहे हैं। उनको ये दायित्व निभाने का शुभअवसर प्राप्त हुआ।

श्री पुरुषोत्तम दास जी ने इस काम को अपने हाथो में लेकर जो बेजोड़ नमूना पेश किया वो भारत में पहली बार हुआ है। **99.42%** ताबें की शुद्ध शीट का इस्तेमाल व्यवसायिक तोर पर कही भी नही किया जाता है। इस सीट से 11 ताबें के अलग अलग कलश तैयार किये गये जो एक 18 फीट लम्बी साल की लकड़ी से बने बीम से जौड़ा गया है। इसको बनाने में 2 महिने और 300 किलो तांबा लगा। ऐसे उन्होने दो गुम्बद बनाये। एक तो गुम्बद के ऊपर 3.5 किलोग्राम सोने का पत्रा चढ़ा कर लगाया गया है और दूसरा नमुने के तौर पर वहीं आम आदमी को देखने के लिए रखा गया है।

जब इस कलश को श्री पुरुषोत्तम दास जी के कारखाने में तैयार किया जा रहा था तो डिस्कवरी चैनल की टीम के द्वारा कई घण्टों तक विडियोग्राफी की गई और इसका प्रसारण दिनांक 27.7.2015 समय 9:00 रात्रि को टी0वी0 के डिस्कवरी चैनल पर दिखाया गया।

हम अपने हैहयवंश परिवार की ओर से श्री पुरुषोत्तम दास जी को इस ऐतिहासिक योगदान के लिए हार्दिक बधाई देते है और कामना करते है कि ऐसे ही पराम्परागत हस्तशिल्प की कला से अपना और अपने समाज का नाम रोशन करते रहें।

विपुल कुमार वर्मा, हैहयवंशी
उपाध्यक्ष (दिल्ली)

हुमाँयु का मकबरा

मुगल सम्राट हुमाँयु का मकबरा दिल्ली के प्रसिद्ध पुराने किले के पास स्थित है। इस मकबरे को हुमाँयु की याद में उनकी पत्नी हामिदा बानो बेगम के द्वारा सन् 1562 में बनवाना शुरू किया था। मकबरे को हुमाँयु की मृत्यु के नौ साल बाद बनवाया गया था। यमुना नदी के किनारे मकबरे के लिए इस स्थान का चुनाव प्रसिद्ध सूफी संत हज़रत निजामुद्दीन (दरगाह) से निकटता के कारण किया गया था।

मुगल सम्राट हुमाँयु के अंतिम शरण स्थल की बजाए यह एक आलीशान महल की याद दिलाता है। हुमाँयु का मकबरा संरक्षित मुगल स्मारकों में से एक है। यह मनमुग्ध समाधि भारत में मुगल वास्तुकला का पहला उदाहरण है जो कि प्रसिद्ध आगरा का ताजमहल के निर्माण को प्रेरित किया गया था। यह कब्र की वास्तुकला जो कि फारसी कला से प्रभावित है। – चतुर्भुज रूप के साथ एक फारसी शैली चार बाग, बगीचे के केन्द्र में कब्र का निर्माण किया गया है।

जैसे–जैसे समय बदलता गया वैसे–वैसे यहाँ का रख–रखाव नहीं हो पाया, यहाँ पर अंसवैधानिक अतिक्रमण आम बात रही। इस कारण इस बहुमूल्य संपदा के अस्तित्व को खतरा बना हुआ था। मकबरे के मुख्य द्वार के निकट अनेक गैर–कानूनी झुग्गी–झोपड़ी थीं। इस स्मारक का जीर्णोद्वार का कार्य "आगा खाँ सांस्कृतिक ट्रस्ट" द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने 1997 में आरंभ हुए सर्वेक्षण के बाद 1999 के लगभग आरंभ किया और मार्च 2003 में पूर्ण हुआ।

विपुल कुमार वर्मा, हैहयवंशी

भगवान अवतार के रूप में क्यों आते है ?

भगवान के अवतार के तीन कारण होते है – पहला अनुग्रह अथवा साधु परित्राण, दूसरा निग्रह अथवा दुष्कृत कारियों का विनाश और तीसरा धर्म संस्थापन। अभ्यूदयशील सांमजस्य की स्थापना हेतु श्री भगवान यथा समय अवतीर्ण होकर यथा योग्य निग्रहानुग्रह प्रदर्शित करते हुए अपनी सृष्टि में धर्म की स्थापना किया करते है भगवत साक्षात्कार तभी हो सकता है जब भगवान में निष्ठा हो निष्ठा तभी होती है जब अनुराग हो अनुराग उसी मे होता है जिस की ओर आकर्षण होगा। अत एवं जीव जात को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए ही भगवान अवतार रूप में ऐसी–ऐसी मन मोहिनी क्रीड़ाए करते है कि जिसे सुनकर श्रोताओ का मन बलात आसक्त हो जाता है उदाहरण के लिए कोटि –कन्दर्पदर्पहा श्री कृष्ण की योग माया द्वारा प्रसाधित रासलीला का दर्शन करके उस समय अनेक देवादि भी भगवान्निष्ठ होकर कृतकृत्य हो गए और अब भी उस परम उज्जवल लीला का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करने वालो के मदन रूपी हृदय रोग का स्वयमेव शमन हो जाता है।

श्री राम, श्री कृष्ण आदि रूपो में श्री भगवान का अवतार आगम ग्रंथो में विभव कहलाता है

जिस रूप में परमब्रह्म परमात्मा अपने समग्र ऐश्वर्य माधुर्य को लिए हुए ही अवतीर्ण होते है उसे पुर्णावतार कहते हैं किन्तु जिस रूप में आवश्यकतानुसार अपने प्रभाव का आंशिक प्राकट्य ही दिखाते हैं उसे अंशावतार कहते हैं। अंश के तुरीय भाग को कला कहते हैं अत एवं अशांवतार का अवान्तर भेद होने से कलावतार को उसी के अर्न्तगत समझना चाहिए।

ओमप्रकाश कसेरा

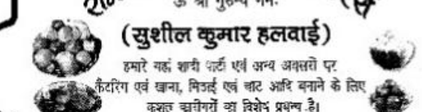

"आलस्य"–इन्सान का निकटवर्ती शत्रु

'Early to bed, Early to rise'
'make a men Healthy Wealthy and wise'

यह Poem / कविता आपने बचपन में
सुनी होगी और "

"जो सोवत है, वो खोवत है।,
जो जागत है तो पावत है।"

यह भी आपके बड़े बुजुर्गो से सुनी होगी, ऐसी बहुत सी बातें सुनी होगी जो कि मानव जीवन 'आलस्य' को दूर रखने के लिए प्रेरत करती है। वास्तव में जीवन शैली का एक विकार 'आलस्य' है। जिसके कारण अनेक व्यक्ति आपने कार्यों को करने के लिए तत्पर नहीं हो पाते है। बहुत से लोग सुस्ती व आलस्य के कारण समय पर उठते नहीं हैं। थोड़ा और, थोड़ा और सोने के लालच में सुबह का बहुत सारा बहुमुल्य समय बरबाद कर देते हैं। अस्त–व्यस्त दिन चर्या के कारण वे दिन में भी किसी भी काम को फुरती के साथ नहीं करते और ढ़ीले ढ़ाले ढंग से कोर्यो को अंजाम देते हैं। ऐसे लोग कुछ खास काम नहीं करते, बस, अपना समय निरर्थक कार्यों में बिता देते हैं। इससे बचने के लिए अपनी दिन चर्या और कार्य शैली में थोड़ा बदलाव करने की जरूरत हैं–

प्रेरणा स्रोत काम कार्यों को तलाशें :– हमारे शरीर व मन में आलस्य का प्रमुख कारण जीवन में प्रेरणा की कमी है। जब तक हम कुछ करने के लिए उत्सुक नहीं होते, तब तक हमारे अन्दर उत्साह का संचार नहीं होता है और इसी कारण चुस्त–दुरस्त रहने के लिए सबसे पहले किसी प्रेरणा स्रोत की तलाश करना जरूरी है, जो हमारे मन को लगातार अच्छा कार्य करने के लिये प्रेरित करता रहे।

प्रेरणा का स्रोत हमारा जीवन आदर्श भी हो सकता है, जिसके जैसा हम बनना चाहते है और जिसे हम हमेशा याद रखते हैं। यहाँ यह जरूरी नहीं कि जीवन आदर्श कोई प्रख्यात व्यक्तित्व से ही हो, बल्कि कोई भी अच्छा व्यक्ति अच्छी पुस्तकें या श्रेष्ठ विचार, जो हमारे मन को प्रेरित करते हों, हमारा प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं। इस तरह प्रेरणा स्रोत का चुनाव हो जाने के बाद हमें अपने महत्त्वपूर्ण कार्यों की सुची निर्धारित करनी चाहिए, जिन्हें न करो पर हमारा विकास अवरूद्ध होता हो। इस दौरान यह जरूर याद रखना चाहिए कि जिस कार्य को पूरा करना है या जो लक्ष्य निर्धारित किया गया है, उसे भूलें नहीं क्योंकि यदि निर्धारित कार्य ही विस्मृत हो गया तो पुनः मन के कोई काम न होने के कारण आलस्य आएगा।

इसका एक बेतहर उदाहरण विद्यार्थियो के जीवन में मिलता है। जब तक उनकी परीक्षाएं नहीं होती। वे बहुत गंभीर होकर नही पढ़ते, पढ़ाई के समय आलस्य दिखाते है, लेकिन जैसे ही उनकी परीक्षाएँ नजदीक आने लगती हैं। वैसे ही वे अपनी पढ़ाई के प्रति गंभीर हो जाते हैं। सब काम छोड़कर पढ़ाई करते हैं। और जिस दिन लिखित परीक्षा होनी होती है, उस दिन उनके अंदर सबसे अधिक तत्परता होती है। कई बार तो परीक्षा की तैयारी के कारण वे ठीक से सो भी नहीं पाते।

इससे यह सिद्ध होता कि यदि व्यक्ति के सामने लक्ष्य स्पष्ट हो, तो उसे कार्य करने की तत्परता होती है और यदि लक्ष्य अस्पष्ट होता है तो कार्य करने की तत्परता दिखाई नहीं पड़ती है। देखा यह भी जाता है कि जो विद्यार्थी परीक्षा का ध्यान रखते हुए साल भर तैयारी करते है, मेहनत करते है, वे अधिक अच्छे से मन लगाकर पढ़ाई करते है; और जो विद्यार्थी केवल परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए परीक्षा के समय पढ़ाई करते हैं। वे अच्छे से नहीं पढ़ पाते और उनके परीक्षा परिणाम भी बहुत अच्छे नहीं आते। इसलिए कार्य करने के लिए अपने निर्धारित कार्य या लक्ष्य को याद रखना जरूरी है। और इसके लिए प्रेरणा स्रोत का होना जरूरी है।

सकारात्मक उदाहरण खोजें :– कार्य में फुर्ती व तत्परता पाने के ऐसे व्यक्तियों के जीवन–उदाहरण अपने सामने रखना चाहिए, जिन्होनें कठिन सघर्ष व परिश्रम से जीवन में सफलता पाई। ऐसे सफल लोगों की जीवन शैली जाननी चाहिए, उनके अच्छी बातों को अपनाना चाहिए। ढूँढने पर हमारे समाज में ही ऐसे कई

लोग मिल जाते हैं जो हमें बहुत प्रेरित करते है और उनके जैसा हम भी कुछ करना चाहते हैं। इसलिए इस तरह के जीवन उदाहरणों को भी अपनी सोच का हिस्सा बनाना चाहिए, जो हमारे कार्य करने को क्षमता से अभिवृद्धि कर सकें।

<u>कल्पना शक्ति का प्रयोग</u> :– सभी लोग बेहतर ढग से जानते है कि कल्पना शक्ति के सदुपयोग से सफलता आसानी से प्राप्त होती है। इसके लिए सबसे पहले हमें वह काम करते हुए स्वयं को देखना चाहिए, जो हमें करना है और इसके बाद कार्य करने का ढंग, कार्य के परिणाम, उसके प्रभाव आदि को देखना चाहिए कल्पना शक्ति तीव्र हो और मनुष्य के चिंतन व कल्पनाओं को सही कार्य योजना का स्वरूप दे सकता है और यही कार्य योजनाएं, सफलता के परिणत हो सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि मात्र आलस्य में पड़कर सतरंगी दुनिया में न खोया जाए, बस कल्पनाओं को सही सोच का और सही योजना का हिस्सा बनाया जाए।

<u>शारीरिक कसरत या व्यायाम भी करें</u>:– जीवन में शारीरिक श्रम की कमीं को भी नज़र अंदाज नहीं करना चाहिए। आलस्य के कारण प्रारंभ में नियमित व्यायाम करना चुनौती पूर्ण हो सकता है फिर भी छोटे–छोटे साधरण प्रयोमों से शरीर को स्फूर्ति प्रदान की जा सकती है। जैसे सुबह की ताज़ी हवा में टहलना सुक्ष्म व्यायाम प्राणायाम इत्यदि करना कुछ ऐसे तरीके है जो हमें निर्धारित व्यायाम के लिए प्रेरित करते हैं।

आलस्य हमारे जीवन से समय–समय पर किसी न किसी बहाने, किसी न किसी रूप में आ ही जाता है। और हमारे कार्यों को पूरा करने में बाध्य बनता है। महर्षि पतांजलि में भी योग–साधना के बाधक तत्वों में आलस्य को प्रथम स्थान दिया हैं। सामान्य व्यक्ति से लेकर बड़े व्यक्तियों तक को आलस्य से जूझने के लिए सही रणनीति बनाने की आवश्यकता होती है, आलस्य को दूर करने के लिए पहले बताए गए उपाय तो आवश्यक हैं ही, पर साथ ही हमारे अंदर से इस संकल्प का उदय होना जरूरी है कि हम शरीर व मन को किसी भी तरह के प्रभाव से दूर रखंगे। ऐसा करने पर ही आलस्य को स्थायी रूप से दूर कर सकेंगें।

ॐ तमसो माँ ज्योतिर्गमय।
ॐ असतो माँ सद्गमय।।
ॐ मृत्योंमाऽमृत गमय।।।
ॐ शान्ति।। ॐ शान्ति।। ॐ शान्ति।।

विपुल कुमार वर्मा, हैहयवंशी
मो.: 9313350597

Ramesh : 9910113672 Mukesh : 9211031552

Ram Singh Pratap Singh

Manufactures of :
Dagga Copper & Brass Wares
Specialists of : Cpper Handa Charei Degs

3555, Than Singh Street, Bazar Sita Ram, Delhi-110006

Shop : 011-23237808, 011-23213810
Resi. : 0120-2795531 (Sanjay)
Mob.: 9818412974 (Sanjay)
9817828019 (Arun)

RACHNA HARDWARE

Deals in : All Types of Nuts, Bolts, Washers & Screws

23, Raghu Shree Market, Ajmeri Gate, Delhi-06

Today is 34th Death Anniversary our Father

Late Shri TULSI RAM VERMA

(1922 = 09-03-1983)

Ever since you left us, we have deeply missed you. You continue to Guide us and will live in our hearts always.

SARGAM EXPORTS

M-89-90, Jagat Ram Park,
Laxmi Nagar, Delhi-110092

SARGAM OVERSEAS

New York. (USA)

Missed by :

SHIV CHARAN VERMA

With All Family Members

+91-9891803354, +91-9811457448

E-mail : shivkam@yahoo.com

Today is 8th Death Anniversary of My Wife

Late Mrs. KAMLESH VEMA

(26-01-1957 = 03-02-2008)

Its' been 8th years since you left us. Your presence is still felt in every moment of our life. We all remember you for the courage, warmth & self belief that you gave us.

Missed by :

SHIV CHARAN VERMA, Delhi #9891803354, 9811457448

Sons and Daughters : Rajesh & Chhaya Verma

Mukesh & Meenu Verma with Shrey - Aradhya

Ajay Verma, Arti & Puneet Verma with Shivi - Sidhhi, Shikha & Vijender Verma

हैहय वंशियों से ठठेरे होने का प्रमाण

भगवान् सहस्त्रबाहु जी के वंशज राजकुमार ताम्रध्वज का विवाह राजकुमारी कुन्ती देवी से हुआ दहेज में मिली अकूल सम्पत्ति के साथ पाँच सौ कुमारिकाये भी मिली राजकुमार ताम्रध्वज ने महारानी के अनुरोध एवं परामर्श के उपरान्त सत्यभामा, विशाखा, चम्पावती, रम्भा और यमुना नाम की सहेलियों से विवाह कर अपनी रानी बना लिया बाकी चार सौ पिच्चानबे को अपने वंश के राजकुमारों को ब्याह दी। इन सभी पाँच सौ राजकुमारियों को सैंकड़ों पुत्र उत्पन्न हुए। कुटुम्ब बढ़ जाने के कारण युवाओं को टकसाल शस्त्र निर्माण, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि धातुओं के बर्तन निर्माण के कार्य में निपूण करवाया।राजा ताम्रध्वज ने कुटुम्ब बढ़ जाने के कारण आपस में ही विवाह की अनुमति दे दी जिससे कि धातु कला कौशल अपने ही वंश में रहे। छत्तीसगढ़ प्रदेश में ये लोग ताम्रकार कहलाये जो कि हैहयवंश शिरोमणि सहस्त्रबाहु जो के वंशज ताम्रध्वज की संताने थी। यही ताम्रकार ही सही मायने में हैहय वंशी हैं। त्वष्टा वंशों जाताषस्ते त्वष्ठेरः। अर्थात् प्रजापति त्वष्टा के वंशज त्वषठेर कहलाते थे जो अपभन्श होकर ठठेर या ठठेरा हो गया।

है ना ठठेरे हैहय वंशी – ? तो क्यों ना लगाये उपनाम हैहयवंशी । चिंतन करें......

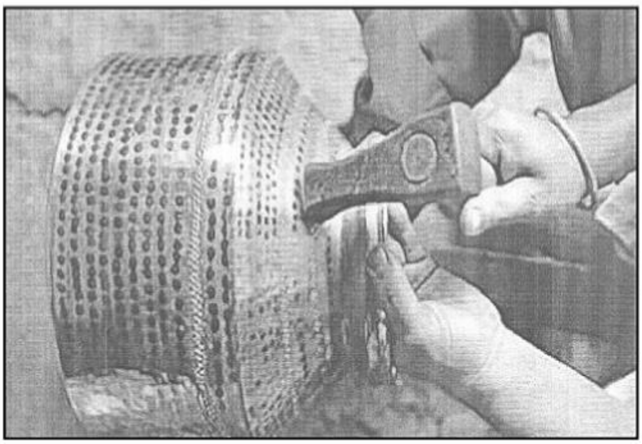

आरती

हे कार्तीवीर्य तेरी आरती गाऊँ
हे महावीर्य तेरी आरती गाऊँ
आरती गाऊँ तेरौ दीप जलाऊँ
दीप जलाकर प्रभु आपको रिझाऊँ
हे कार्तीवीर्य मैं तेरी आरती गाऊँ।।१।।

स्वर्ण मुकुट तेरे शीश पै सोहे
मनोरमा संग तेरौ मेरौ मन मोहे
देख छवि बलिहारी मैं जाऊँ
हे कार्तीवीर्य आरती मैं तेरी गाऊँ ।।२।।

हजार भुजा सै नर्मदा रोक लियो है
रावण के दर्प को तुमने चूरकियो है
उस प्यारी छवि देख मैं इतराऊँ
हे कार्तीवीर्य आरती मैं तेरी गाऊँ ।।३।।

दास अनाथ के नाथ आप हो
निर्धन दुखियों के सदा साथ हो
आपको सुमिर कर फिर धन पाऊँ
हे कार्तीवीर्य आरती मैं तेरी गाऊँ ।।४।।

सौजन्य से –
हैहयवंश आचार्य विनोद शास्त्री
श्री कार्तवीर्य नक्षत्र ज्योतिष संस्थान
हाथरस, (यू. पी.)

फोटोग्राफी व फोटोपत्रकारिता

फोटोपत्रकारिता और पत्रकारिता लगभग एक जैसे नज़र आते हैं किन्तु दोनों अपने आप में कुछ ऐसी असामनाताऐं लिए हुए हैं कोई खबर कभी–कभी तब तक पूरी नहीं होती, जब तक की उसके साथ फोटो न हो। जबकि एक फोटो अपने आप में पूरी कहानी बयान करने वाली होती हे और किसी खबर या लेख की मोहताज नहीं होती। एक फोटोपत्रकार अपने आप में चश्मदीद होता जबकि एक लेखक अपने चारों और घटने वाली घटनाओं वातावरण माहौल परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी कहानी, लेख अथवा खबर का ताना बाना बुनते हुए अपना नज़रिया पेश करता है जिसमें उसके अपने विचार भी सम्मिलित होते हैं। जबकि एक फोटो पत्रकार अपनी कला का समावेश करते हुए घटना व यथास्थितथि का चित्रण करता है।

छायांकन एक कला है जैसे पेंटर, मूर्तिकार व अन्य कलाकार इत्यादि। फोटोग्राफी के क्षेत्र में आज क युग में असीम संभावनाएं हैं।

फिल्म, फैशन, विज्ञापन तथा शादी जैसे परम्परागत कार्यक्रमों में एक फोटोग्राफर का कार्य अति महत्वपूर्ण होता जा रहा है लोग आजकल नवीनतम तकनीक का प्रयोग करके अच्छे से अच्छा परिणाम प्राप्त करते हुए शानदार व्यवसाय कर रहे हैं।

आज के युग कैमरे भी हर वर्ग का ध्यान रखते हुए बाजार में आ रहे हैं आप को दस हजार से लेकर चार लाख तक की कीमत के कैमरे बाज़ार में मिल जायेंगे जिन्हें आप अपनी जरूरत के हिसाब से खरीद सकते हैं। कई सरकारी व गैर सरकारी संस्थान आपको फोटोग्राफी सीखने के लिए उपलब्ध हैं, जैसे आई.टी.ओ. जहाँगीरपुरी दिल्ली, दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, भारतीय विद्या भवन दिल्ली, त्रिवेणी कला संगम इत्यादि कुछ सरकारी मान्यता प्राप्त है तथा कई निजी संस्थान भी आपको मिल जायेंगे लेकिन ये कोर्स कराने का अच्छा पैसा लेते हैं, अतः जाँच पड़ताल करने के बाद ही वहाँ जाना चाहिए।

विजय वर्मा हैहयवंशी
Principal Photo Juournalist
The Press Trust of india (PTI)

Our Elder Brother
L. Sh. Kanti Prakash Verma
(30.03.1945 = 04.09.1982)

SARGAM EXPORTS
M-89-90, Jagat Ram Park,
Laxmi Nagar, Delhi-110092
SARGAM OVERSEAS
New York. (USA)

Remembering you on

Your 71st Birthday

Sometimes we feel very lonely, miss your benign presence but we know your love & care is always with us.

Deeply missed by :
his wife Kusum Verma and her son Sumit Verma
Shiv Charan Verma with
all Family Members
9891803354, 9811457448
E-mail : shivkam@yahoo.com

श्रीमद् हैहयवंश कथा

वेदों के मतानुसार परमब्रह्म सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड के निर्माण के पूर्व पराभव शक्ति माया का प्रादुर्भाव किया। उसके बाद सबसे पहले आकाश और बाद में पवन, अग्नि, जल और पृथ्वी को अस्तित्व दिया। माया को चराचर के विकास के कार्य को निरन्तर बढ़ाते रहने का आदेश हुआ। वैज्ञानिकों के मतानुसार पृथ्वी और सूर्य को अनि का टुकड़ा कहा गया है। यह उपरोक्त वेदमत से मेल खाता है, हो सकता है अग्नि के टुकड़े के रूप में पृथ्वी जल के नजदीक किगरा और सूर्य आकाश में गया हो। जिससे पृथ्वी जल के समीप होने के कारण जल्द ठंठी हो गई और सूर्य आकाश में होने के कारण अभी भी अत्यन्त तेज पुंज है।

पृथ्वी में माया के विकास से अनेक प्रकार के प्राणी, पशु, जीव–जन्तु, वृक्ष आदि की प्रगति होती रही। परन्तु देवों और दानवों में आपस की वैमनस्यता भी आगे बढ़ती गई, इससे संघर्ष की स्थिति भी बनती जा रही थी। इसको टालने के लिए दोनों पक्षों की शक्ति को सकारात्मक कार्य में लगाने की दृष्टि से समुद्र मंथन का प्रस्ताव दोनों पक्षों ने मान लिया।

समुद्र मंथन के लिए सुमेर पर्वत को धरनी (मथानी) और आसुकी सर्प को रस्सीके रूप में प्रयोग किया गया। परन्तु मथानी को स्थाई आधार न मिलने से समुद्र में नीचे धसते चले जाने की समस्या उत्पन्न हो गई। दोनों पक्षों ने मिलकर परमब्रह्म विष्णु भगवान् से प्रार्थना की। विष्णुजी इस समस्या के पहल के लिए दशावतार क्रम में पहले मत्स्य अवतार के बाद दूसरा अवतार कूर्मा (कछुआ) का लिया। जिसकी पीठ अत्यन्त कठोर होती है और पानी में सहज रूप से जीवित रहता है। कूर्मा के पीठ का स्थाई आधार मिलता है और समुद्र के मंथन से चौदह रत्न निकलते हैं। ये चौदह रत्न वर्ग – क्रमानुसर निम्नलिखित हैं : परम दिव्य नारी रत्न श्री लक्ष्मी जी एवं आलौकिक अप्सरा, परम दिव्य नर रत्न–चन्द्रमा एवं धनवंतरी (पुनिजान) परम दिव्य पशुरत्न ऐरावत (परिमान) हाथी उच्चेश्रवा (अश्व) एवं कामधेनु गाय, परम द्रव रत्न – अमृत सुरा एवं गरल, (अहिकन्त) परम दिव्य वस्तुएँ – धनुष, कौस्तुभमणि एवं शंख, परम अनन्त वृक्ष कल्पतरू।

इन दिव्य रत्नों का यथोचित ढंग से वितरण में भगवान विष्णु को मंथन में सफल योगदान के लिए श्री लक्ष्मी जी, कौस्तुभ मणि एवं शंख भेंट किया गया। लोक कल्याण की दृष्टि से चन्द्रमा को आकाश और धनवन्तरी को पृथ्वी लोक में भेज दिया गया। देवराज इन्द्र की सभा के ऐश्वर्य के लिए अप्सरा एवं ऐरावत हाथी को दिया गया। गरल द्रव को कोई ग्रहण नहीं करना चाहता था। उसे देवाधिपति महादेव भोलेशंकर नाथ ने विषपान कर अपने गले में उतार लिया। धनुष अर्पण किया गया। धनुष सूर्यदेव को रथ के वाहन के लिए उच्चेश्रवा अश्व (हैहय) प्रदान किया गया। परम अनन्त कल्पतरू को स्वर्ग के बाग में स्थान दिया गया। कामधेनु को उचित पालनपोषण सेवा सुविधा की दृष्टि से ऋषि जमदग्नि एवं धर्मचारिणी रेणुका के आश्रम को अर्पित किया गया। बलिष्ठ सौष्ठवशाली द्रव सुरा का पान करने के लिए देवगण राजी हो गये और सुरापान कर देवगण सुर कहलाने लगे, दानव जिन्होंने सुरापान नहीं किया वे असुर हो गये। क्योंकि अंतिम परम पुनीत अमरदायिनी अमृत पान करने की इच्छा से दानवगण धीरज धारण किये बैठे थे। परन्तु देवगण यह नहीं चाहते थे अतः अमृत के लिए दोनों पक्षों में विवाद होने लगा।

इसी बीच इन्द्र पुत्र जयन्त अमृत कुम्भ लेकर भागने लगा, दानव भी उसके पीछे भागे। हिमालय तथा उसके नीचे का भू–भाग जिसे भरतखंड कहा जाता है महा प्रयत्न के बाद जलमग्नता से सबसे पहले ऊपर आया। अतः इसे परम पवित्र भूखंड माना जाता है। इसी भू–भाग में जयन्त अमृत कुम्भ लेकर भागता रहा और इस दौरान पवित्र नदियों के किनारे बसे चार महानगरों – हरिद्वार, प्रयागराज (इलाहाबाद) उज्जैन एवं नासिक में अमृत कुम्भ को रखा। इसलिए उस अमृत कुम्भ से अमृत छलक कर वहाँ के जल स्रोतों में मिल गया, जिससे अमृतमय हो गए। सतयुग की घटना की सत्यता के आधार पर इस कलियुग में इन स्थानों के अमृतमय जल में स्नान एवं पान करने के लिए बारह वर्षों के अन्तराल में महाकुम्भ का मेला लगता है। श्रद्धालु भक्तजन इस इस पर्व में अमृत स्नान एवं पान कर सहस्त्र यज्ञों का पुण्य प्राप्त कर अपने को धन्य मानते हैं।

अन्त में जयन्त अमृत कुम्भ रखे उन दानवों के साथ देव–दानवों के समूह के बीच उपस्थित हुआ। परन्तु अमृत कौन बाँटे इस पर एक राय नहीं हुई। इस अवसर पर भगवान विष्णु मोहनी का रूप धारण कर आते हैं। मोहनी का रूप देख दानव मोहित हो जाते हैं और दोनों पक्ष पंक्तिबद्ध बैठकर अमृत पान करने को राजी हो जाते हैं। एक तरफ देवगण, दूसरी ओर दानवगण बैठ जाते हैं। मोहनी के असली रूप को दानव पहिचान नहीं पाये, परन्तु भगवान शिव मोहनी रूप को जान गये और भगवान विष्णु से मोहनी रूप के दर्शन का अनुरोध करते हैं। शिव मोहनी

पर आसक्त हो जाते हैं तब हरिहर मानससुत भगवान अय्यप्पन का जन्म होता है जिनका शवरीमला पर्वत में बने मन्दिर में निवास है। मोहनी ने देवताओं की ओर अमृत बाँटना शुरू किया तब दानवों में एक दानव राहू को शंका हो गई कि अमृत दानवों तक नहीं पहुँच पायेगा। वह रूप बदलकर सूर्य और चन्द्रमा के बीच देव पंक्ति में आकर बैठ गया। सूर्य के अमृत पान के बाद जब राहू अमृत पान कर चुका तब देवताओं को मालूम हुआ कि वह दानव है आपत्ति की तब विष्णु ने चक्र से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। चूँकि वह अमृत पान कर चुका था अतः उसका सिर और धड़ अलग होकर भी अमर हो गये। आज भी प्रकाश पुंज सूर्य एवं शीतल प्रकाश कंद चन्द्रमा को राहू ग्रस लेता है जिसे ग्रहण कहते हैं। वैज्ञानिक अचल सूर्य चलायमान पृथ्वी एवं चन्द्रमा के गति पथ को अवरोध पूर्ण छाया आने की स्थिति को ग्रहण की संज्ञा देते हैं। परन्तु नक्षत्र ग्रह मंडल में नौ ग्रह हैं उनमें राहू और केतु भी हैं। अभी तक मानव चन्द्रमा पर पहुँच पाया है, मंगल ग्रह में पहुँचने का प्रयास हो रहा है। राहू और केतु के बारे में वैज्ञानिक अपनी राय निश्चित नहीं कर पाये हैं। हो सकता है सूर्य के चारों घूमते ग्रहों में राहू या केतु की छाया सूर्य पर पड़ने के कारण हमें पृथ्वी में प्रकाश कम दिखाई देता है या पूर्ण छाया पड़ने पर अंधकार–सा मालूम होता है। उसी प्रकार चन्द्रमा में राहू के अवरोध के कारण पृथ्वी में चन्द्रमा का प्रकाश कम या पूर्ण छाया पड़ने पर अंधकार पूर्ण स्थिति आ जाती हो।इसलिए हम पौराणिक के आधार पर ग्रहण का कारण राहू या केतु ग्रह के प्रभाव को एकदम नकार नहीं सकते।

परमब्रह्म के दशावतार क्रम में हमले प्रथम अवतार मत्स्य (मछली) और दूसरे अवतार कूर्मा (कछुआ) का सन्दर्भ दे चुके हैं। उसके बाद तीसरा शूकर (सूअर) के अवतार में भगवान हिराक्ष का वध कर पृथ्वी का तारण करते हैं। चतुर्थ अवतार नृसिंह (नरसिंह अर्धमानव अर्ध हिंसात्मक पशु सिंह के रूप में भक्त प्रहलाद की रक्षा एवं हिरण कश्यपु का वध करते हैं। पंचम वामन अवतार में महान यशस्त्री धर्मात्मा राजा बलि को इन्द्रासन पाने की लालसा से विरत करते हैं। तीन पग पृथ्वी दान का संकल्प लेकर विराट रूप में अंतिम पग राजा बलि के पीठ पर रखकर अमरत्व प्रदान कर स्वयं पहरेदारी का भार लेकर इन्द्र की रक्षा करते हैं। छठवें परशुराम अवतार में ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के आश्रम में जन्म लेकर नीति, धर्म की रक्षा, अनाचार, अत्याचार को मिटाने के लिए पृथ्वी क्षत्रियविहीन के उद्‌देश्य से जन्मना ब्राह्मण होकर कर्मणा क्षत्रिय कर्म करते हैं। सतयुग के उपरोक्त छः अवतारों के बाद त्रेतायुग का पदार्पण हो चुका था। सतयुग में उत्तम ऋषि पुलत्सय कुल में जन्में महाबलशाली रावण अनाचारी, आतताई, अत्याचारी सर्व वैभवशाली लंकाधिपति बन चुका था, सप्तम अवतार रघुकुल में चक्रवर्ती राजा दशरथ के यहाँ राम के रूप में आकर रावण का वध कर आदर्श राम–राज्य की स्थापना करते हैं। त्रेता युग समाप्त होने वाला था। द्वापर युग का आगमन हो चुका था। अष्टम अवतार में दुराचारी राजा मामा कंस का वध करते हुए फल ईश्वर की इच्छा पर छोड़ने का उपदेश देकर महाभारत युद्ध में अर्जुन का सारथी बनकर अन्याई कौरव वंश को समाप्त कर न्याय की रक्षा करते हुए, पांडवों को राज्य दिलाते हैं। अब तक कलियुग का आगमन हो चुका था, अशांति और हिंसा विभिन्न आयामों के साथ उत्कर्ष की ओर था, नवें अवतार के रूप में भगवान बुद्ध ने शान्ति और अहिंसा के नये मानव कीर्ति को अक्षुण्ण बनाने का विश्व को सन्देश दिया। अब कलियुग के अन्तिम चरण में मानव दसवें अवतार भगवान कल्कि की प्रतीक्षा कर रहा है।

हैहयवंश कथा में समुद्र मंथन एवं परमब्रह्म के दशावतार से अत्यन्त निकट का समामेलन है इसलिए इन घटना चक्रों का पूर्व में संक्षेप वर्णन किया गया है। क्षीर सागर में आनन्द कंद भगवान विष्णु लक्ष्मीजी के साथ रमण करते हुए त्रैलोक्य में माया की क्रिया का आनन्द अनुभव कर रहे थे। अचानक एक दिन लक्ष्मी जी आकाश मार्ग में सूर्य देव के रथ में जुते अपने सहोदर भ्राता उच्चेश्रवा अश्व (हैहय) को चाबुक से पीटते दशा की व्यथा को देख द्रवित हो हृदय में उससे मिलने की तीव्र उत्कण्ठा लिये मलिन मुख हो गई। अन्तर्यामी भगवान विष्णु लक्ष्मी जी की मानसिक दशा को भाँप कये और उन्हें (लक्ष्मी जी को) अश्व (हैहय) रूप देकर उच्चेश्रवा से मिलने सूर्य लोक भेज दिया। वहाँ लक्ष्मी जी हैहय रूप धारण किये अपने भाई की वास्तविक दशा जानने के उद्‌देश्य से रूकीं। इधर भगवान विष्णु लक्ष्मी की अनुपस्थित से विरक्त से रहने लगे। स्वयं हैहय का रूप धारण कर लक्ष्मी जी से मिलने सूर्य लोक पहुँचे। वहाँ उच्चेश्रवा के अनुवय विनय से कुछ काल विश्राम किया। सूर्य लोक में अनावश्यक शिष्टाचार, स्वागत औपचारिकता के बंधन से मुक्त, वास्तविक पहिचान न होने और उच्चेश्रवा के वास्तविक दशा से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के उद्‌देश्य से लक्ष्मी जी को हैहय रूप दिया और स्वयं हैहय रूप धारणकिया। कुछ अवधि के बाद अंशमान परम दिव्य मानव सुत का जन्म हुआ जिसका नाम एकवीर्य (एक वीर) रखा गया। यही लक्ष्मी पुत्रा एकवीर्य हैहयवंश के आदि वंश पुरूष हैं।

तरुणाई पौरुष साष्ठव के उम्र में लक्ष्मी पुत्र एकवीर्य का देवों के राजा इन्द्र की सुपुत्री जयन्ती की सौभाग्य कांक्षणी सहोदरा जयन्ती के साथ मांगलिक पाणिग्रहण लग्न सम्पन्न हुआ। उनके पुण्य फल स्वरूप जो पुत्र रत्न प्राप्त हुआ, उसका नाम कृतवीर्य रखा गया। कृतवीर्य का शुभ विवाह वरुण सुपुत्री हीरावती के साथ हुआ। इस युगल जोड़ी से जो पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ,

उसका नाम कार्तवीर्य रखा गया। कार्तवीर्य की शादी इन्द्र दमन नामक राजा की सुपुत्री से हुई। इन्हें पुत्र रत्न मिला अवश्य, परन्तु न मालूम ग्रहों की क्रूर दृष्टि या पूर्व कर्म फल के प्रभाव से शिशु के जन्म से ही दोनों भुजा नहीं थी ठूठा पैदा हुआ। इसलिए उसका नाम अर्जुन रखा गया। यही हैहयवंश कुल का एकमात्र उत्तराधिकारी था। कार्तवीर्य की मृत्यु के बाद अर्जुन अपनी अपंगतावश असमर्थ समझ कर राज सिंहासन पर नहीं बैठना चाहता था। परन्तु ऋषियों, मुनियों एवं सभासदों ने पौराणिक एवं राज परिवार के कुल रीतिरिवाज के अनेक दृष्टान्त देकर राज सिंहासन पर बैठने के लिए राजी कर राजतिलक दे दिया। अर्जुन ऋषि मुनियों की राय मान भगवान दत्तात्रेय की श्रद्धापूर्वक कठोर सेवा भक्ति और आध्यात्मिक अनुष्ठान करते हैं। भगवान दत्तात्रेत्र कौन हैं इनका वर्णन श्रीमद्भागवत में संक्षिप्त में इस प्रकार है – सती अनुसुया का प्रभाव देखकर पार्वती जी, लक्ष्मी जी और सरस्वती जी को बड़ी ईर्षा हुई। उन्होंने अपने–अपने पतियों को अनुसुया के पातिव्रत्य के प्रभाव को खंडित करने के लिए प्रेरित किया। पत्नियों के आग्रह से तीनों देव अनुसुया के पति अत्रिमुनि की अनुपस्थिति में उनके आश्रम पर अनुसुया के पास पहुँचे अनुसूया ने अर्घ्य–पाद्य आदि से स्वागत सत्कार करके बैठने तथा भोजन करने की प्रार्थना की। त्रिदेवों ने कहा, 'अनुसूया तुम निवसन होकर भोजन परोसेगी तो हम भोजन करेंगे।' अनुसूया धर्म संकट में पड़ गई कि पर पुरुषों के सामने नग्न होना भी अनुचित है और अतिथियों का भूखा–प्यासा लौट जाना भी अनुचित है। अनुसूया मन ही मन में कुछ संकल्प करते हुए कमंडल में रखा हुआ पति देव का चरणामृत हाथ में लिया और अतिथियों पर छिड़क दिया। उस चरणोदक का स्पर्श होते ही तीनों देव नवजात शिशुओं के रूप मे परिणत हो गये। ये तीनों जोर–जोर से रोने लगे। अनुसूया ने उन्हें गोद में उठाकर स्तन पान कराया। यही तीनों बालक आगे चलकर स्वयं 'दत्त' हो गये। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये दत्त – दत्तात्रेय जी ही त्रिगुणात्मक भगवान हैं।

अर्जुन की भक्ति सेवा आराधना से प्रसन्न होकर भगवान दत्तात्रेय ने सहस्त्राबाहु होने का वरदान दे दिया और अनेक मन्त्र तन्त्रों का उपदेश देकर आधि भौतिक सिद्धियों और साम्राज्य सुख वैभव आदि से सम्पन्न किया। उसके बाद अर्जुन सहस्त्रबाहु कार्तवीर्य अर्जुन के नाम से प्रख्यात हुआ। उन्होंने अपने साम्राज्य की राजधानी महष्मति नगरी नर्मदा नदी के किनारे बसाया, जो वर्तमान मध्य प्रदेश के मंडल नामक शहर के पास ही रहा होगा। क्योंकि नैसर्गिक दृश्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि सहस्त्रार्जुन ने अपनी सहस्त्र भुजाओं से नर्मदा की धारा को रोककर अपनी रानियों को जल क्रीड़ा कराया था।

सहस्त्रार्जुन के राज्य वैभव को देख ऋषि मुनियों ने विश्वामित्र की परम सुन्दर सुलक्षणी चार कन्याएँ जो ऋषि जमदग्नि के आश्रम में विद्या अध्ययन कर रही थीं, उनके साथ वैवाहिक लग्न सम्बन्ध कर महारानियों के पद में शोभायमान करने की राय दी और लग्न तय कर दी। अब ये चारों जीवन–संगिनी महारानियाँ बनकर राजमहल की शेभा को चार चाँद लगा रही थीं।

बहुत समय बीतने के बाद महाराज सहस्त्राबाहु अपने कुछ सैनिकों के साथ जमदग्नि ऋषि के आश्रम में अतिथि के रूप में पधारते हैं वहाँ उनका आलौकिक राज सीमान सम्मान के साथ आतिथ्य स्वागत की व्यवस्था होती है। आश्रम में राजसी व्यवस्था से महाराज सहस्त्राबाहु अत्यन्त प्रभावित होते हैं और ऋषिराज से पूछते हैं यह सब वन के आश्रम में रहकर कैसे व्यवस्था कर पाते हैं। ऋषि जमदग्नि अत्यन्त सहज दीनभाव से बताते हैं। यह सब कामधेनु की कृपा से माँग करने पर प्राप्त होती है। महाराज सहस्त्रबाहु कामधेनु की माँग करते हैं। ऋषि उस आलौकिन पशुरत्न को देने की अनिष्छा प्रगट करते हैं। महाराज आवेश में कहते हैं कामधेनु राजा महाराजा के पास होनी चाहिए ऋषि मुनियों के पास इसकी क्या आवश्यकता, कहकर ऋषि जमदग्नि को घायल कर जबरदस्ती कामधेनु ले जाते हैं।

जब यह सारा वृतान्त ऋषि पुत्र परशुराम जी को ज्ञात हुआ तो वे हैहयवंश के नाश करने का संकल्प कर लेते हैं। परशुराम–सहस्त्रार्जुन युद्ध मं सहस्त्रार्जुन को वीर गति मिलती है। फिर भी परशुराम जी का क्रोध शांत नहीं होता और परशुराम जी अपने गुरु भगवान शिव से प्राप्त धनुष चढ़ाकर गर्भणी चारों रानियों का गर्भ नाश करने पर उतारू हो जाते हैं ताकि हैहयवंश का सर्व कुल नाश जाए। परशुराम जी का क्रोधित आक्रान्त रूप देख विलखाती रोती चिल्लाती भयभीत चारों रानियाँ शरणागत हो जाती हैं। शरणागत रानियों की करुण व्यथा देख उनका क्रोध कुछ शांत होता है। चारों रानियों से वचन लेते हैं कि यदि तुम्हारी होने वाली सन्तान क्षत्रिय वृत्ति का त्याग करेगी, तभी मैं तुम्हें जीवनदान दे सकता हूँ। इस तरह की वचनबद्धता से उन्हें जीवनदान मिला और हैहयवशं का सर्वस्व नाश होने से बच गया।

समय आने पर चारों रानियों ने चार पुत्र रत्नों को जन्म दिया। बड़े होने पर पुत्रों ने अपने पिता के बारे में पूछा। माताओं ने सम्पूर्ण वृत्तान्त बताते हुए भगवान परशुराम को अपने द्वारा दिये गये वचन के बारे में भी बताया। उत्तेजित पुत्रों ने पिता के वध का बदला लेने के उद्देश्य से भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए कठोर भकित साधना की। जब इस साधना का पता परशुराम जी को चला तो अपनी रक्षा के लिए माँ सरस्वती से प्रार्थना की, माँ सरस्वती ने समय अपने पर रक्षा करने का आश्वासन और आशीर्वाद दिया।

भगवान शंकर चारों भाइयों की उपासना से

प्रसन्न हो वर माँगने को कहते हैं उसी समय माँ सरस्वती उनके कंठ में बैठ जाती हैं। बेचारे भाई 'बाणेजय के वरदान माँगतने की बजाय 'वाणिज्य' का वर माँग लेते हैं। बादमें अपनी भूल मालूम होने पर पुनः प्रार्थना करते हैं माता पार्वती प्रसन्न हो सभी भाइयों को आशीर्वाद देती हैं कि मैं सदा महाकली के रूप में तुम्हारी रक्षा करूंगी और तुम लोग भगवान विश्वकर्मा से ज्ञान प्राप्त कर संसार की सेवा करो।

चारों भाई भगवान विश्वकर्मा की भक्ति सेवा में जुट जाते हैं। भगवान विश्वकर्मा उन भाइयों को अलग–अलग धातु विद्या, प्रक्रिया, स्वर्ण, रजत निर्माण, आभूषण कला एवं रस–रसायनादि सिद्ध औषधियों का आचार्य बना देते हैं। इन सभी कार्यों में अग्नि भठ्ठी का प्रयोग होता है। इस भठ्ठी में माँ महाकाली सर्वदा विराजमान रहती हैं। इसीलिए त्रिशूल का चिन्ह बनाकर माँ महाकाली की पूजा–अर्चना, आराधना के बाद भठ्ठी प्रक्रिया का प्रारम्भ होता है।

धातु विद्या प्रक्रिया में ताम्बा मूल धातु में रांगा (Tin) (ताम्बा 100 मात्राा में 25 मात्रा रांगा) मिलाकर गलाने से शुद्ध कांसा तैयार होता है, ताम्बे में जस्ता के मेल से पीतल तैयार होता है। इस प्रकार अलग–अलग भाइयों ने अपने धातु विद्या के आधार पर काँसे, पीतल, ताम्बे के गृह–उपयोगी पात्र, कलात्मक शोभनीय वस्तुएँ निर्माण कर व्यवसाय के रूप में अपना लिया। इस कलात्मक निमाण प्रक्रिया में हथौड़ों से ठक–ठक करके रूप में गढ़ा जाता है। इसलिए सर्वसाधारण लोगों ने ठक–ठक की आवाज करने वालों को ठठेरा नाम दे दिया।

वास्तव में ताम्बा मूल धातु पर यह धातु विद्या आधारित है इसलिए लोगों ने तमेर–तमेरा, ताम्बे, ताम्वट आदि नाम दिये। उनका सुधरा रूप ताम्रकार, जिसका अर्थ है ताम्बा धातु में काम करने वाले। अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं से काँसे के विभिन्न प्रकार के बर्तनों की ढलाई और ठोक–ठोककर काँसे के अलग–अलग रूपामें के बर्तन बनाने वालों को कान्स्यकार, कसारा, कंसेरा आदि उपनामों से सम्बोधित किया जाता है।

सोमवंशी महाराजा, कार्तवीर्यात्मिजोर्जुनः
तसयान्वये समुत्पन्नाः वीरसेना दयोनपा।
तेषा मष्यन्यवे शूराः कान्स्वत्युपजीविनः
कंसारा इति विख्याताः कालिका यजनेरता।।
– 'कालिक पुराण'

इस वर्ग के कुछ परिवार चाँदी की ढलाई द्वारा और आधुनिक मशीनों की सहायता से गृहापयोगी, पूजा विधि पात्र, कलात्मक वस्तुओं के निर्माण का कार्य करते हैं। बनारस एवं राजकोट के कंसेरा (कंसारा) परविार विशेष कर सिद्ध हस्त है। कलात्मक वस्तुओं के साथ–साथ ताम्बे, कांसे, पीतल, सोने, चाँदी, पंच धातु, अष्ठ धातु योग से शास्त्रोक्तक विधि–विधान से सभी प्रकार के देवी–देवताओं, देवदूतों, ऋषि मुनियों, महापुरुषों, राजनैतिक नेतओं, राजा महाराजाओं आदि के सजीव मूर्तियों का निर्माण कार्य भी करते हैं। इस तरह क्षत्रिय वंश में जन्म लेकर भी धातु विद्या के आचार्य होने के कारण धातुओं से विभिनन प्रकार का निर्माण किया और प्रमुखतः उससे निर्मित वस्तुओ की वाणिज्य का कार्य करते हैं।

एक भाई जो स्वर्ण रजत (चाँदी) धातु विद्याा का आचार्य था। उसकी सन्तान को स्वर्ण (सोना) पर कार्य करने के कारण सोनार, सुनार, सोनी, स्वर्णकार आदि उपनामों से सम्बोधित किया जाने लागा। जो भाई रस–रसायनादि द्रव औषधि का आचार्य था उसकी सन्तान वनापज एवं कृषि उपज की अनेक वस्तुओं के आधार पर रस–रसायन बनाने का कार्य करने लगे। फल, वनोपज, कृषि उपज वस्तुओं को पृथ्वी में दबाकर बाद में अपनी कला चातुरी से रस बनाने की प्रक्रिया करने वाले को (कला+रस) से कलार के रूप से सम्बोधित किया जाने लगा। आजकल अनेक उपनाम कलवार जायसवाल आदि प्रचलित हैं।

यदि हम भारत जैसे अति प्राचीन देश के प्रत्येक वंश या जाति की उत्पत्ति का पौराणिक शोधात्मक अध्ययन करें तो हमें यह सिद्ध करने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी कि वे किसी न किसी ऋषि मुनि की ही सन्तान हैं। जो विभिन्न विद्याओं, व्यवसाय–कर्म गुणों के आधार पर जाति, उपजाति, गोत्र आदि से अलग–अलग सम्बोधित किये जाते हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में लेखन वर्णमाला, उच्चारण, बोली आदि में एकरूपता न होने से भी अनेक विकृत रूप में सम्बोधित किये जाते हैं।

– स्व0 डॉ0 भैय्या ताम्रकार
जन्म : 19.04.1933
मृत्यु : 13.04.2011

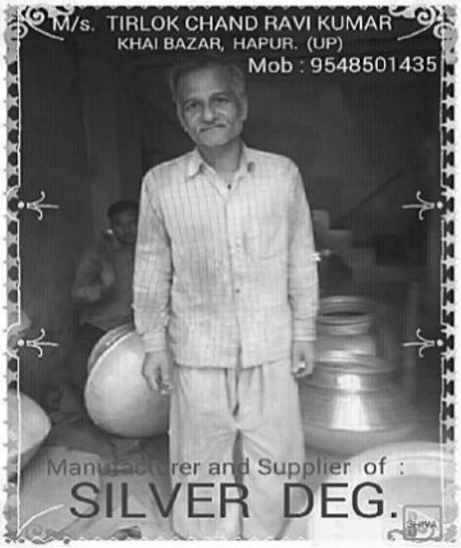

Kuldeep Verma
9350071578, 9312277572

Prem
Bandhan Cards

Designer Invitation & Wedding Cards

4023, Chawri Bazar, Delhi-110006
Phone : 011-30518345
E-mail : prembandhancard4023@gmail.com

In Loving Memory of
Late Smt. Kusum Verma
W/o, Late Sh. Kanti Prakash Verma
Deeply missed by :
her son Sumit Verma & Vaishali Verma
with Vaibhav & Himanshi
Mob.: 7503967279, 9811559575
Shiv Charan Verma with
all Family Members
9891803354, 9811457448
E-mail : shivkam@yahoo.com

(Date of Death : 03.06.2016)

मदर्स- डे

माँ–माँ कहा मगर यह सच है,
मॉं का अब कोई नाम कहाँ है ?
चाहिए एक पालने वाली,
वरना माँ का काम कहाँ है ?
देश वही है जहाँ माँ, माँ थी,
कैकेयी हो या कौशल्या,
धरती माँ हो गौ माता हो,
या हो अपनी गंगा मईया,
वासुदेव पिता थे जिनके,
जन्म दिया देवकी माँ ने,
पर बाबा तो नंद बाबा थे,
और कान्हा की जसुमति मैय्या।
अब तो माँ बस इक दिन की है,
दुकानों में बसती है,
मदर–डे के कार्डों में है,
महंगी है या सस्ती है।
ज़रा बुढ़ापा आने पर,
बच्चों पर भारी होती है,
ओल्ड–होम पहुँचाने की,
तब तैयारी होती है।
माँ तो अब माँ कहाँ रही ?
वह तो 'मम्मी' कहलाती है,
शीशे के ताबूतों में सजी,
टिकटों पर देखी जाती है।
इतना अपमान हुआ इस शब्द का,
सोच के लज्जा आती है,
कितनी लाचार बेबस है वह,
जो जग–जननी कहलाती है।
कोई तो ख़ुद को पहचाने,
विद्रोह का परचम फहराए,
माँ कहलाने का मोह त्याग,
नारी जाति का मान बढ़ाए।
कह दें मेरा अस्तित्व है कुछ,
इसको न कभी गंवाउँगी,
खाती हूँ कसम ममता की मैं,
मैं 'माँ' ही नहीं कहाऊँगी।

संकलन :
आरती वर्मा ज़गाधरी (हरियाणा)

गोत्र, उपगोत्र व अल्ल

(श्री झम्मन लाल जी पुराने समाज सेवी थे। आप के दो लेख प्रकाशनार्थ प्राप्त हुए। आपके लेखों से समाज अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। इस उद्देश्य से वे लेख अखिल भारतीय हैहयवंशी क्षत्रिय महासभा के मुखपात्र 'हैहयवंश' कानपुर को प्रकाशनार्थ भेज दिये गये थे। यहाँ पर केवल गोत्र समबन्धी भाग ही प्रथम भाग में प्रस्तुत किया जा रहा है। द्वितीय भाग स्व0 श्री पुत्तूलाल वर्मा 'करुणेश', नई दिल्ली के अप्रकाशित 'हैहयवंश' इतिहास के द्वितीय भाग (नवयुग) से उद्धृत किया जा रहा है। – सम्पादक

प्रथम भाग (श्री झम्मन लाल जी आगरा)

कांसार (ठठेरे) क्षत्रिया जाति के 52 गोत्र निम्न भांति हैं :–

4. प्रकार के सौनपालिया	:– 1. खोरीचुंगा 2. खलचुगा 3. सजावलपुरिया 4. बनेटीवाल
4. प्रकार के अमरसरिया	:– 1. मोतीचुगा 2. खलचुगा 3. कूलवाल 4. ब्यानिया
4. प्रकार के मैदराडिया	:– 1. फतेपुरिया 2. चारस 3. जोवे वरिया 4. कालाडेर
4. प्रकार के बागड़ी	:– 1. बवेरवाल 2. चांवडिया 3. चरखीवाल 4. मधौनिया
4. प्रकार के मोटा	:– 1. गाड़ा 2. पहाड़वा 3. सीदमुख 4. धार धरेटिया
4. प्रकार के भालिया	:– 1. गुरावडिया 2. खैरथलिया 3. बागेटी 4. बहादुरपुरी
4. प्रकार के खेतपालिया	:– 1. छारिया 2. बड़ौदिया 3. मसालीवाल 4. ग्वालेरिया
6. प्रकार के अतलसिया	:– 1. मेवाती 2. कुनकुटिया 3. वरनवाल 4. छैधरिया 5. पाटनिया, 6. गन्धोरा
34.	

35. नरेड़ी, 36. झांझरी, 37. पचपांडिया, 38. पचवारिया, 39. मांडनिया, 40. मनदेरा, 41. खान खापरा, 42. रावत, बागड़ी, 44. लिलौरिया, 45. मोहरया, 46. मोडिया अनंत, 47. गडेसरिया, 48. डहरवाल, 49. खुलाखाँपरा, 50. महलस, 51. लौंगिया, 52. माधवान, कांसार क्षत्रिय (ठठेरों) के यही 52 गोत्र हैं। इन्हीं के अन्तर्गत अब तक इस जाति के ब्याह सम्बन्ध होते चले आ रहे हैं। इन गोत्रों में अपना गोत्र, माता का गोत्र, दादी का गोत्र तथा नानी के गोत्र को छोड़कर सम्बन्ध किये जाते थे, परन्तु अब केवल अपना गोत्र तथा माता का गोत्र ही छोड़कर सम्बन्ध किये जा रहे हैं।

Vijender Verma : 8307980198 7037827245

RAM BABU BELE WALE

Manufacturers & Suppliers of :

All Kinds of Bele

METAL ARTWARES

Kamla Bazar, Holi Wali Gali, Hathras (UP)

द्वितीय भाग

(श्री पुत्तू लाल वर्मा, नई दिल्ली)

भारत के 327 स्थानों की जनगणना के अनुसार निम्न 266 गोत्र, उपगोत्र का पता चला है :–

1. अगरही
2. अगोही
3. अतलसिता
4. अनंत
5. अवरोहिया
6. अमरसरिया
7. अमलसुक
8. अयोध्यापारी
9. उकसा
10. उड़हा
11. ऊलशा
12. कटारा
13. कटिया
14. कटंगी
15. कठान
16. कन्नौड़
17. कपिल
18. कमंडल
19. करकस
20. करैया
21. कठैगर
22. कश्यप
23. कशियारे
24. काँठा
25. काँपा
26. काला डैरा
27. काँसे वाले
28. कुन कुटिया
29. कूलवार
30. कौरहा
31. कोशी
32. कौअहवा
33. कौशल्य
34. कौशिक
35. कंजरहा
36. खर्चाहार
37. खटार
38. खमेले
39. खमेवे
40. खरमोरिया
41. खर्रा
42. खलचुंगा
43. खौगेर
44. खाड़न
45. खान खपरिया
46. खापरा
47. खुटहा
48. खुला खांपरा
49. खेतपालिया
50. खैरपलिया
51. खोरीबाल
52. खंजरिहा
53. ग्वलेरिया
54. गड़ेसरिया
55. गढ़ैया
56. गहलौन
57. गाढ़ामोटा
58. गिन्नौस
59. गुर्जरिहा
60. गुड़हा
61. गुरावरिया
62. गुलरहा
63. गौली पाड़वा
64. गंधोरा
65. घरियाचोर
66. घुच्चहा
67. घोड़हार
68. चरखीवाल
69. चहारविया
70. चारन
71. चाँवड़िना
72. चिड़ीमार
73. चिचौल
74. चिनौरिया
75. चिरेवान
76. चूड़िहार
77. चुरकट
78. चुरैट
79. चोरवार
80. चौधरिया
81. चौरिया
82. चौसिहा
83. चन्द्रहार
84. चंदौरिया
85. छपहा
86. छारिया
87. छीपा
88. छुलहा
89. छैघरिया
90. जड़िया
91. जसेठे
92. जाजा मौआ
93. जीवेवरिया
94. झमैया
95. झाझरी
96. झालावाड़ी
97. टसुआ
98. टौंक
99. ठठार
100. डगसा
102. डहरवाल
103. डुहरवाल
104. डेरहा
105. तांबा पचनिया
106. तिमोड़ा
107. तिराही
108. तिलहा
109. तोलगे
110. तोलगे
111. थकेरिया
112. थिनौल
113. दक्षिणहा
114. दुसहा
115. दुहरा
116. देवड़ा
117. धार धरेटिया
118. धुवैल
119. धौतिलहा
120. ननुआ
121. नरवरिहा
122. नरैड़ी
123. नबाब
124. नाग
125. नागर
126. निहनवार
127. पचगया
128. पचपाड़िया
129. पचमड़िया
130. पचवारिया
131. परवरिया
132. पहाड़ी मोटा
133. पहारता
134. पहेतिया
135. पाटनियां
136. पाटिया
137. पिंडारा
138. पीनाखान
139. पीली भीतिया
140. पैगवार
141. पैतिया
142. पौसेरिया
143. पण्डा
144. पवार
145. फतहपुरिया
146. ब्यानियां
147. बघेल
148. बड़वार
149. बड़ौदिया
150. बनबथिया
151. बनयायन
152. भेड़मार
153. बरनवाल
154. बरिह
155. बरैया
156. बबेरवाल
157. बस्तीगन
158. बसरिया
159. बहादुरपुरी
160. बहेलियां
161. बागड़िया
162. बागेटी
163. बाजरिया
164. बाँहकूटा
165. बिचकटा
166. बिनोदिया
167. बिलकटा
168. बुद्ध
169. बुधमनियां
170. बेंगी
171. बैहाली
172. बंगरहा
173. बंदैया
174. भटिहारा
175. भदौरिया
176. भाटी
177. भाड़ावासी

178.	भारद्वाज	202.	मुलतानी	227.	लहवा	250.	सुहागरे
179.	भाल	203.	मुलहा	228.	लाठा	251.	सुहेल
180.	भालिया	204.	मूसानगरी	229.	लिलौरिया	252.	सूर्यमुखी
181.	भुसवारिया	205.	मैनवार	230.	लोधा	253.	सेठ
182.	भेड़मार	206.	मेवाड़िया	231.	लौगिया	254.	सेंगर
183.	भोट	207.	मेवाती	232.	लौहरोट	255.	सेंदुरहा
184.	भंगाड़े	208.	मेहदराड़िया	233.	शनीचरिहा	256.	सेतवार
185.	मणटेरा	209.	मोटा	234.	शिरशाहा	257.	सोंगरे
186.	मथूरिया	210.	मोटेसरा	235.	शिवपुरिया	258.	सोन पालिया
187.	मधौनया	211.	मोती चुंगा	236.	सजावलपुरिया	259.	सोलंकी
188.	मन्धोरा	212.	मोहरा	237.	सटहा	260.	सौपुरहा
189.	मनहरिया	213.	मोहरिया	238.	सरौतिया	261.	हेड़ीवार
190.	मलिंगा	214.	मौजारी	239.	सारस	261.	हयारण
191.	मसालीवाल	215.	मंडैहरा	240.	साह	262.	हरौल
192.	महलस	217.	रसनिया	241.	सिकन्दरपुरी	263.	हरदिहा
193.	महिलवार	218.	राजा	242.	सिरवैया	264.	हलहना
194.	महिलिया	219.	राणा	243.	सिरोही	265.	होलिया
195.	महुआ	220.	रामगढ़िया	244.	सिलसूख	266.	हंटोल
196.	महुआगार	221.	रावत	245.	सिसौदिया		
197.	माचेड़ीवाल	222.	रोडहार	246.	सीसमुख		
198.	माठनियाँ	223.	रैवाड़े	247.	सुकरहा		
199.	माड़नया	224.	लेखेटे	248.	सुमगढ़ा		
200.	माधवान	225.	लच्छ	249.	सुपहा		
201.	मुड़कटा	226.	लशकरिहा				

Shop : 011-22427658, 22469169
Mob.: 9560214452 (Nand Lal)
9953664050 (Amrit Sagar)

A. SAGAR BOOK HOUSE

Publishers & Distributors of Indian & Foreign Books

H-60, Street No.-3, Laxmi Nagar, Delhi-110092
E-mail : asagarbh@yahoo.com

SHOP
011-23237530

PURUSHOTTAM DAS
9811068681

HANDICRAFT HOME (INDIA)

Manufacturers of : Brass & Copper Art Wares, Utencils, Lamps & Lamp Shades, Planters & All Type of Handicrafts

440, Gali Sheesh Mahal, Bazar Sita Ram
Delhi-110006 (India)

अ. भा. है क्ष. केन्द्रीय संचालन समिति (पंजी.), पत्रिका
स्थयी-कोष के विशिष्ट आर्थिक सहयोगी

क्र.	नाम व स्थान	दानराशि
1.	श्रीश्यामलाल मोटे, दिल्ली व बर्लिन (जर्मनी)	12,101
2.	श्री गोवर्धनदास अनन्त, एडवोकेट, दौलतराम बिहारीलाल कसेरा, रेवाड़ी (हरि)	8,001
3.	श्री शंकरलाल–प्रमिला, तार्मकार, जबलपुर (म.प्र.)	7,501
4.	डॉ. राम स्वरूप वर्मा, मथुरा	7,500
5.	ई. सत्यप्रकाश हैहयवंशी, लखनऊ (उ.प्र.)	5,555
6.	श्री चम्पालाल कसेरा, वाराणसी	5,151
7.	डा. लखन लाल ताम्रकार, सागर (म.प्र.)	3,511
8.	श्री शंकर लाल कसार, रीवा (म.प्र.)	3,011
9.	श्री शिव कुमार तमेर एवं डा. श्रीमती उज्जल तमेर, दुर्ग (म.प्र.)	2,751
10.	श्री गोकर्णनाथ सिंह, कानपुर (उ.प्र.)	2,601
11.	श्री कृष्ण कुमार वर्मा, बम्बई (महाराष्ट्र)	2,501
12.	श्री विजय कुमार कसेरा, कानपुर (उ.प्र.)	2,001
13.	श्री अशोक तार्मकार एवं श्रीमती सुनंदा तार्मकार, विदिशा	2,001
14.	श्री नरेन्द्र तार्मकार एवं श्रीमती विद्युत तार्मकार, विदिशा	2,001
15.	श्री मांगीलाल पंडा, जबलपुर (म.प्र.)	1,612
16.	श्री तुलसीराम लवकेश कुमार ठठेरे (हैण्डीक्रफ्ट)	1,602
17.	श्री सोत्तम सिंह जी, वाराणसी (उ.प्र.)	1,501
18.	श्री गिरधारी लाल वर्मा, आगरा (उ.प्र.)	1,501
19.	श्री सतीश, नायक, एक्जीक्यूटिव इन्जिनियर, नागपुर	1,500
20.	श्री प्रकाश चन्द्र, तार्मकार, कोटा (राज.)	1,500
21.	बद्री प्रसाद चन्द्र, तार्मकार, कोटा (राज.)	1,252
22.	अभि. शारदा नन्द सहा, बी देवघर (बिहार)	1,205
23.	श्री जवाहर लाल पुष्पेन्द्र कुमार तार्मकार, कोतमा (म.प्र.) निवासी, दिल्ली	1,191
24.	श्री रामगोपाल तार्मकार, जबलपुर (म.प्र.)	1,152
25.	श्री रमेश कुमार (तांबे वाले), टांक, राजस्थान	1,151
26.	श्री रमेश चन्द कसेरा (बूंदी वाले), जगाधरी, हरियाणा	1,131
27.	श्री कौशल कुमार हयारण, भोपाल	1,122
28.	श्री शैलेन्द्र कुमार महेन्द्र कुमार ताम्रकार, बड़वाह (म.प्र.)	1,121
29.	श्री मनोज कुमार, अरविंद कुमार, खण्डवा (म.प्र.)	1,111
30.	श्री तन्तोषी कुमार, गोपाल दास कसेरे, बड़वाह (म.प्र.)	1,111
31.	श्री वेदभगवान कुलभूषण वर्मा हौजकाजी, दिल्ली	1,111
32.	प्रोफेसर भरत प्रसाद रेणुका रानी कांस्यकार, गुमला (बिहार)	1,111
33.	श्री रामयश तार्मकार, रीवा (म.प्र.)	1,101
34.	श्रीमती सविता एवं डा. विनोद बी. ताम्रकार, जबलपुर (म.प्र.)	1,101
35.	श्री सुक्खनलाल सुनीलकुमार ताम्रकार, जबलपुर (म.प्र.)	1,101
36.	श्रीमती तुलसी देवी, बीकानेर (राज.)	1,101
37.	श्री रामगोपाल जी कसेरे, मुरादाबाद (उ.प्र.)	1,101
38.	श्री बिशन स्वरूप जी, रिवाड़ी	1,101
39.	श्री शैलेन्द्र कुमार, रितेश कुमार, आगरा (उ.प्र.)	1,101
40.	श्र महेश चन्द (एम.पी.मैटल), रिवाड़ी	1,101
41.	श्री जय किशन वर्मा, अशोक बिहार, दिल्ली	1,100
42.	श्री फूलचन्द टिंकर, जयपुर (राजस्थान)	1,100
43.	श्री गणेश तार्मकार, जबलपुर (म.प्र.)	1,100
44.	डॉ. विमल कुमार, जगाधरी (हरियाणा)	1,100
45.	श्री भरत लाल तार्मकार रीवा (म.प्र.)	1,055
46.	श्री संजीव ताम्रकार, भिलाई (दुर्ग), छत्तीसगढ़	1,051
47.	श्री जितेन्द्र नाथ मनीष कुमार वर्मा, रूड़की उत्तरांचल	1,010
48.	श्री एम.के. वर्मा, फरीदाबाद (हरियाणा)	1,005
49.	श्री के.एल. वर्मा, जबलपुर (म.प्र.)	1,002
50.	श्री रामनाथ अरुण कुमार ताम्रकार, उचेहरा (सतना. म.प्र.)	1.002
51.	श्री ओमप्रकाश वर्मा वैशाली गजियाबाद (उ.प्र.)	1,002
52.	श्री राय बहादुर प्रसाद, नोएडा (उ.प्र.)	1,002
53.	श्री रूपचंद सिंह, कानपुर (उ.प्र.)	1,001
54.	श्री रामखिलावन ताम्रकार, रीवा (म.प्र.)	1,001
55.	श्री रामलाल ताम्रकार, रीवां (म.प्र.)	1,001
56.	श्री कालूराम पैगवार ट्रस्ट चीचली (नरसिंहपुर–म.प्र.)	1,001

क्र.	नाम व स्थान	दानराशि
57.	श्री शंकरलाल काशी वाले, चीचली (नरसिंहपुर–म.प्र.)	1,001
58.	श्रीमती शशिकरण दुबे, जिला एवं सत्र न्यायाधीश, जबलपुर (म.प्र.)	1,001
59.	श्री वीरेन्द्र कुमार तार्मकार (लालसाहब), मैहर (सतना, म.प्र.)	1,001
60.	डॉ. योगेश पैगवार, जबलपुर (म.प्र.)	1,001
61.	श्री रमेश कुमार जासांठी, जबलपुर (म.प्र.)	1,001
62.	श्री एस.एन. वर्मा. पुणे (महाराष्ट्र)	1,001
63.	डॉ. आर.डी. जी. प्रसाद, रांची (बिहार)	1,001
64.	श्री अरविन्द वर्मा एवं श्रीमती मृदुला वर्मा, जबलपुर (म.प्र.)	1,001
65.	सुश्री स्वाती चंद्रवंशी, देवास (म.प्र.)	1,001
66.	श्री काशी प्रसाद ताम्रकार, एडवोकेट, अमरपाटन (सतना, म.प्र.)	1,001
67.	कैलाश ताम्रकार, इंजीनियर जबलपुर (म.प्र.)	1,001
68.	श्री प्रदीप कुमार कसेरा, बाजार सीताराम, दिल्ली	1,001
69.	श्री मुकुन्द लाल कसेरा, (वाराणसी वाले) गांधी नगर, दिल्ली	1,001
70.	डा. बी.पी. ताम्रकार दुर्ग, (म.प्र.)	1,001
71.	श्री शीतल प्रसाद कसेरा, गांधी नगर दिल्ली	1,001
72.	श्री नन्दलाल कसेरा, कृष्ण नगर, दिल्ली	1,001
73.	श्री पी.डी. लाखे, इटारसी	1,001
74.	श्री पुरुषोत्तम दास वर्मा, गली, शीश महल, दिल्ली	1,001
75.	श्री दिनेश चन्द्रा, बुलवर्ड रोड, दिल्ली	1,001
76.	श्री अविनाश नरवारिया सुपुत्र श्री प्रताप नरवारिया (वाराणसी वाले) वैशाली, गाजियाबाद	1,001
77.	श्री संजय राम ताम्रकार, एडवोकेट, जलबपुर	1,001
78.	श्री रविन्द्र कुमार सिंह, सुपुत्र श्री ललित मोहन सिंह, लखनऊ	1,001
79.	श्री नन्दकिशोर, अमित कुमार (आगरे वाले), दिल्ली	1,001
80.	श्री देव चरण अजयकुमार ताम्रकार, जबलपुर	1,001
81.	डॉ. ओमप्रकाश हयारण 'दर्द', श्रीमती चन्द्रकांता हयारण झांसी (उ.प्र.)	1,001
82.	श्रीमती ज्योति प्रदीप नाईक, बुरहानपुर (खण्डवा म.प्र.)	1,001
83.	श्री सुगनलाल ली वर्मा, खोपोली (रायगढ़ महाराष्ट्र)	1,001
84.	श्री कृष्ण वर्मा. ग्वालियर (म.प्र.)	1,001
85.	श्री कृष्ण कुमार वर्मा (आई.ओ.सी.), दिल्ली	1,001
86.	श्री गौरव, सत्यनारायण पैगवार, भोपाल	1,001
87.	श्री श्रीचन्द्र कसेरा, मिरजापुर (म.प्र.)	1,001

क्र.	नाम व स्थान	दानराशि
88.	श्री भगवत प्रसाद, लोहरदगा झारखण्ड	1,000
89.	श्री प्रदीप कुमार ताम्रकार रीवा	1,000
90.	श्री प्रेम चन्द वर्मा (एमटीएनएल, दिल्ली)	1,000
91.	श्री गणेश तार्मकार वास्तुशास्त्र विशेषज्ञ, लखनऊ	1,000
92.	श्री मदन बिहारी वर्मा, लखनऊ (उ.प्र.)	1,000
93.	श्री डॉ. के.के. तार्मकार, मोह (म.प्र.)	1,000
94.	श्री राम स्वरूपचन्द कसेरा, मिरजापुर, (उ.प्र.)	1,101
95.	डा. प्रदीप कसार एवं श्रीमती नीता कसार (एडवोकेट)	1,000
96.	श्री उमेश चन्द्र ताम्रकार एवं श्रीमती मोहनी तार्मकार, जबलपुर	1,001
97.	श्री गिरीश चन्द्र ताम्रकार एवं श्रीमती सुजाता ताम्रकार, जबलपुर	1,301
98.	श्री मोहनलाल कसेरा एवं श्रीमती पूनम कसेरा गोपाल, मध्य प्रदेश	2,100
99.	श्री भगवान दास कसेरा, जगाधरी (हरि)	500
100.	श्री ओमप्रकाश कलसे वाले, हाथरस, (उ.प्र.)	500
101.	श्री आनन्दी लाल महेश चन्द कसेरे, आगर, (म.प्र.)	500
102.	श्री लक्ष्मी नारायण रामचन्द्र जी कसेरा, आगर (म.प्र.)	500
103.	श्री सोहन लाल गोरधन दास जी कसेरा, आगर (म.प्र.)	500
104.	श्री देवकी नन्दन मुकेश कुमार कसेरे, अतरौली (उ.प्र.)	500
105.	श्री राजकुमार जी बर्तन वाले, अतरौली (उ.प्र.)	500
106.	श्री लक्ष्मी नारायण जगदीश प्रसाद कलसे वाले, हाथरस, (उ.प्र.)	500
107.	श्री मोलड मल खट्टन लाल कसेरे, पानीपत (हरि.)	501
108.	श्री धनप्रकाश जी कसेरे, जगाधरी (हरियाणा)	501
109.	श्री महेन्द्र प्रसाद जी, मुजफ्फरपुर (बिहार)	500
110.	श्री लल्मूमल महावीर प्रसाद कसेरा, (राजस्थान)	501
111.	श्री राधेश्याम जी कसेरा, कोटा, (राजस्थान)	500
112.	श्री नारायण लाल मगनलाल जी कसेरा, कोटा (राज.)	500
113.	श्री अनिल कुमार जी अमर सरिया, कोटा, (राज.)	500
114.	श्री सूरज भान हैहयवंशी, (दिल्ली)	500
115.	श्री प्रताप सिंह जी, (सी.बी.आई.), कानपुर (उ.प्र.)	501
116.	श्री मुरारी लाल जी वर्मा, (जलेसर वाले), काशीपुर	500
117.	श्री अवधेश प्रसाद जी ताम्रकार, कोतमा, (म.प्र.)	500
118.	श्री नाथूराम शिवकुमार कसेरे, मुरादाबाद, (उ.प्र.)	500
119.	श्री गोविन्द मोहन वर्मा, शाहजहांपुर, (उ.प्र.)	500

नोट– सर्वसाधरण से निवेदन है कि **"पत्रिका–स्थाई–कोष"** हेतु एक हजार रुपये या इससे अधिक राशि बैंक ड्रफ्ट द्वारा "अखिल भारतीय हैहयवंशी क्षत्रीय केन्द्रीय समिति (रजि.), नई दिल्ली" के पक्ष में भेजें तथा औरों से भी भिजवायें, जिससे कि इस त्रैमासिक पत्रिका को अधिक पृष्ठों में अथवा मासिक रुप से प्रकाशित की जा सके। बैंब ड्राफ्ट समिति के नाम कोषाध्यक्ष के पते पर ही भेजें/भिजवायें, उनका नाम व पता पृथम पृष्ठ पर लिख हुआ है। ऐसा करने पर पत्रिका निरन्तर निःशुल्क उनको भेजी जाती रहेगी तथा उनका नाम, राशि सहित, पत्रिका "विशष्ट आर्थिक सहयोगी" की सूची में प्रकाशित भी होता रहेगा। हर वर्ष या 3 वर्ष उपरांत, चन्दा समाप्त होने पर, मनी आर्डर द्वारा राशि भेजने की झंझट नहीं होगी।

अ.भा.है.क्ष. केन्द्रीय संचालन समिति (पंजी.) शिक्षा प्रसार (उपसमिति) के विशिष्ट आर्थिक सहयोगी

क्र.	नाम व स्थान	शिक्षा प्रसार
1.	श्री श्यामलाल मोटे, दिल्ली व बर्लिन (जर्मनी)	11,000
2.	श्री गोवर्धनदास अनन्त, एडवोकेट, दौलतराम बिहारी लाल कसेरा, रेवाड़ी (हरियाणा)	3,600
3.	डा. रामस्वरूप वर्मा, मथुरा	2,500
4.	श्री सोत्तम सिंह जी, वाराणसी (उ.प्र.)	400
5.	श्री राय बहादुर प्रसाद, नोएडा (उ.प्र.)	1,100
6.	श्री शम्भूदयाल चौहरिया, नागपुर	1,100

"शिक्षा–प्रसार–स्थाई हुतु एक हजार या अधिकाधिक रकम भेजना तथा भिजवाना समाजोन्नति के पथ की ओर महम्वपूर्ण वास्तविक कदम है; अतः समस्त हैहयवंशी–बंधुओं से प्रार्थना है कि किसी के आग्रह की प्रतीक्षा किये बिना, स्वयंमेव इन दोनों प्रकार के स्थाई कोषों पर विशेष ध्यान देकर अपना–अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। यह हर्ष का विषय है कि किसी के आग्रह के बिना 'पत्रिका स्थाई कोष' के लिये धनराशि भेज दी है। इस ओर अधिक प्रयास की आवश्यकता है तथा 'शिक्षा स्थाई कोष' हेतु भी।

अध्यक्ष, शिक्षा प्रसार उपसमिति

Mob.: 9810234146 (Kailash Chand)

VERMA SONS

For All Kinds of Quality Welded Wiremesh
98, Loha Mandi Ghaziabad (U.P.)

K.C. Verma — Prashant Verma

K.C. Sales Corporation

3547, Sita Ram Bazar, Delhi-6, Phone : 011-23282463

Sunil Kr. Verma (9212716264) 011-23213818 Ashish Verma (Ashu) 9811192425

JAGDISH PARSHAD SUNIL KUMAR

Mfr. of All Types of Musical Instruments

1158, Mohalla Imli, Kucha Pati Ram, Bazar Sita Ram, Delhi-110006
E-mail : info@jpskmusicalstore.com | Website : www.jpskmusicalstore.com

शुभ विवाह

चि0 अमित (सुपुत्र श्रीमती शशी रानी एवं स्व0 श्री नरेश कुमार वर्मा,निवासी दिल्ली) का विवाह दिनांक 23 नवंबर 2015 आयु0 नेहा (सुपुत्री श्रीमती बीना एवं श्री विनोद वर्मा, निवासी हापुड़) के साथ सम्पन्न हुआ।

चि0 अनुज (सुपुत्र श्री अशोकर कुमार, निवासी कानपुर) का विवाह दिनांक 2 दिसम्बर 2015 आयु0 सोनिया (सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र, निवासी कानपुर) के साथ सम्पन्न हुआ।

चि0 अजय वर्मा (सुपुत्र श्रीमती एवं श्री गिरिश कुमार वर्मा) निवासी हापुड़ का शुभ विवाह दिनांक 17 फरवरी 2016 आयु0 सोनम (सुपुत्री श्रीमती एवं श्री चन्द्र प्रकाश, निवासी भोपाल) के साथ हापुड़ (उ.प्र.) में सम्पन्न हुआ।

चि0 प्रियांक (सुपुत्र श्रीमती आशा एवं डॉ0 योगेन्द्र कुमार, निवासी दिल्ली) का विवाह दिनांक 22 नवंबर 2015 आयु0 नीलम (सुपुत्री श्रीमती सुमन वर्मा एवं श्री गोपाल वर्मा, निवासी हाथरस) के साथ सम्पन्न हुआ।

1. आयु0 सुनैना (सुपुत्री श्री नन्द किशोर जी, निवासी हाथरस), का विवाह दिनांक 04 फरवरी 2016 को चि0 अतुल (सुपुत्र श्री नरेन्द्र कुमार जी, निवासी गुना, म.प्र.) के साथ गुना, मध्य प्रदेश में सम्पन्न हुआ।

2. चि0 गौरव (सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार जी, निवासी हापुड़) का विवाहस दिनांक 12 फरवरी, 2016 को आयु0 रेखा (सुपुत्री श्री राजकुमार जी निवासी हाथरस) के साथ हापुड़, उ.प्र. में सम्पन्न हुआ।

हम अपने हैहयवंशी परिवार की ओर से दोनों परिवारों को हम हार्दिक बधाई देते हैं और नवविवाहित जोड़ों को सुखी विवाहित जीवन की कामना करते हैं।

विवाह योग्य जीवन साथी (निःशुल्क सेवा)

अविवाहित वर/कन्या का विवरण

क्र.	नाम/जन्म तिथि	शिक्षा	कद/रंग/ व्यवसाय	पिता का नाम/ पता/फोन न.	गौत्र
1.	राम कृष्ण कसेरा 26/01/1984	PhD (Biology) (मंगली),	5'6", गेंहुआ नौकरी	स्व रमेश चन्द्र कसेरा M/S गायत्री इन्टरप्राइज 9/7 C, आर्य समाज गली Opp. लक्ष्मी नारायण मन्दिर जगाधरी (हरियाणा) Mob. 09416892259 09729675579	झनझरीवाल
2.	कुमारी आकांक्षा 07/01/1990	M.A. (संस्कृत)	5' 4" गौर वर्ण नौकरी	श्री अशोक कुमार कसेरा 65, कृष्णा नगर कालवार रोड, वोरिंग रोड गली न. 1, झोट वाडा, जयपुर (राजिस्थान)	अमरसरिया कुलवाल
3.	अभिजीत अमर 25/08/1982	Graduate & Diploma in Computer Engineering	5' 8" गेंहुआ नौकरी	स्व डॉ. के के वर्मा 36/2/9-A मोहन पुरा, आगरा Mob. 9368636714, 9258012775	अमरसरिया
4.	वैभव वर्मा 27/12/1988	B.Tech (ECE)	5' 7" गेंहुआ नौकरी	श्री पी. सी. वर्मा Plot No.-227, शक्ति कुन्द, इन्दिरापुरम Mob. 9873959680 9013133837	पंचपटिया
5.	राधिका वर्मा 11/01/1991	Post Graduate Diploma in Financial Mgmt.	5' 2" गेंहुआ	श्री सुशील वर्मा 135/9A साकेत नगर, भोपाल Mob. 9202200200	मेवाती
6.	अजय वर्मा 25/09/1987	10th Pass	5' 5" गेंहुआ नौकरी	श्री शिवचरण वर्मा M-89-90, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092 Mob. 989-180-3354, 981-145-7448	बागड़ी

<u>नोट</u>– प्रकाशनार्थ लेख, विचार, कविताएं विवाह योग्य बालक/बालिकाओं के विवरण एवं अन्य सामग्री (जो आम जनमा के लिए लाभप्रद हो) भेजने के लिए सम्पर्क करें–श्री राय बहादुर प्रसाद हैहयवंशी, बी–59, सैक्टर–15, नोएडा, जिला–गौतम बुद्ध नगर, यूपी–201301

E-mail: – generalsecretary@haihaivanshiya.com & rbp_shashi_prasad@yahoo.com

विशेष सूचना

यह जानकार आपको खुशी होगी कि केन्द्रीय संचालन समिति ने कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के बढते प्रभाव को ध्यान में रखते हुए अपने समिति का एक वेब साइट तैयार की है और साथ में सभी पदाधिकारियों के पद से जुड़े E-mail address भी रजीस्ट्रर किया गया है जिसके माध्यम से आप सीधे सम्पर्क कर सकते हैं। आप अपने विचारों को त्वरीत गति से हमारे पास भेज सकते हैं और केन्द्रीय संचालन समिति यह प्रयास करेगी कि आपके सुझावों एवं विचारों पर उचित निर्णय लेकर आपको E-mail के माध्यम से सूचना दी जा सके।

आप सभी लोगों से प्रार्थना है कि इस सुविधा का लाभ उठाये और संस्था को और आगे बढ़ाने में अपना पूरा सहयोग प्रदान करें।

भविष्य में समिति की पत्रिका "हैहयवंशी जनवाणी" को ON-LINE प्रकाशित करने की व्यवस्था की जा रही है ताकि समाज के अधिक से अधिक लोगों के पास यह पत्रिका पहुँच सके और इसका लाभ उठा सके।

A. Website name **http://haihaivanshiya.com**
B. E-mail address are as follows:

1. Email : president@haihaivanshiya.com
2. Email : vicepresident@haihaivanshiya.com
3. Email: generalsecretary@haihaivanshiya.com
4. Email: secretary@haihaivanshiya.com
5. Email: treasurer@haihaivanshiya.com
6. Email: matrimony@haihaivanshiya.com
7. Email: executivemember@haihaivanshiya.com

C. Facebook address is **"Akhil Bharatiya Haihaivanshi Kkss"**

विज्ञापन चंदा हैहयवशं जनवाणी पत्रिका के लिए

साईज	ब्लैक एण्ड वाईट	कलर
फुल पेज	₹ 1000/–	₹ 1500/–
हाफ पेज	₹ 500/–	₹ 750/–
1/3 पेज	₹ 300/–	₹ 400/–
1/4 पेज	₹ 250/–	₹ 375/–

विज्ञापन चंदा हैहयवशं वैब साईट के लिए

वार्षिक चंदा	₹ 900/–	**अर्ध वर्षिक**	₹ 500/–

फोन : 9811731946

मैसर्स किशनलाल प्रदीप कुमार

बर्तन विक्रेता

स्टेनलैस स्टील, ताँबे, पीतल के बर्तनों के फुटकर विक्रेता

3550, बाजार सीताराम, हौज काजी, दिल्ली-110006

सादगी का पाठ

यह प्रसंग उस समय का हे, जब लाल बहादुर शास्त्री देश के गृह मंत्री थे। उन दिनों उनके तीन बच्चे नई दिल्ली के सेंट कोलंबस स्कूल में पढ़ते थे। तीनों बच्चे एक साथ तांगे से स्कूल जाते थे। वे अक्सर देखते कि उनके सभी मित्र गाड़ियों से स्कूल आ रहे हैं।

उनके मित्र मजाक–मजाक में उनहें कह भी देते, 'अरे, तुम्हारे पिता तो मंत्री हैं। क्या वे अपने बच्चों के लिए गाड़ी भी नहीं ले सकते।' एक दिन तीनों बच्चों ने निर्णय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए, बाबूजी से इस संबंध में बात करेंगे। उस दिन शास्त्री जी देर रात घर लौटे। उनके घर पहुँचते ही सुनील उनके पास जाकर बोले, 'पिताजी, हमारे दोस्त हमें चिढ़ाते हैं कि उनके पिताजी तो आपके मंत्रालय के अधीन हैं, फिर भी उनके पास गाड़ी है।' बच्चे की यह बात सुनकर शास्त्री जी मुस्कराते हुए बड़ी सहजता से बोले, तुम सब का स्कूल गाड़ी से जाने का ही मन है तो मैं तुम्हारी इच्छा के लिए गाड़ी खरीद दूंगा। पर पता नहीं कल मैं मंत्री पद पर रहूं न रहूं, उस समय हमारी आर्थिक स्थिति जाने कैसी हो। तब तुम्हें फिर से स्कूल गाड़ी के बजाय तांगे से ही जाना होगा। यदि यह बात तुम्हें मंजूर है तो फिर हम गाड़ी जरूर खरीद लेगें। पिता की यह बात सुनकर तीनों बच्चे हैरान रह गए। उन्हें लगने लगा तब तो हमारे मित्र हमारा और अधिक मजाक उड़ाने लगेंगे। ऐसे में यही उचित है कि हम तांगे से स्कूल जाना जारी रखें। तीनों की मंत्रणा खत्म हो गई तो वे शास्त्री जी के पास जाकर बोले, 'बाबूजी, आप हमें क्षमा कर दीजिए। हमसे बड़ी भूल हो गई थी। हम अब यह समझ गए हैं कि व्यक्ति को हर स्थिति में सादगी के साथ ही आगे बढ़ना चाहिए।' अपने बच्चों की बातें सुनकर शास्त्री जी ने मुस्कराकर उन तीनों को आशीर्वाद दिया और उनसे दूसरी बातें करने लगे।

संकलन : **शिव चरण वर्मा** हैहयवंशी

स्माइल प्लीज

जरूरी सूचना

जो अपने बॉयफ्रेंड को 'मेरा बेबी' या 'मेरा बच्चा' कहकर बुलाते हैं, वे संडे को उन्हें पोलियो की दो बूंदें पिलाना ना भूलें।

जनहित में जारी

हैप्पी मॉर्निंग

एक लड़की ने बस स्टॉप पर एक हैंडसम लड़के को देखा और मोहित होकर बोली : I LOVE YOU.

लड़के ने लड़की के सर पर उसी का दुपट्टा रखा और बोला : राम का नाम जपा करो, प्यार मुहब्बत में कुछ नहीं रखा।

इस कागज़ पर गायत्री मंत्र लिखकर दे रहा हूँ, सोने से पहले रोज पढ़ लिया करो। (लड़के ने कागज़ लिखकर लड़की को पकड़ाया, बस आई और वो निकल गया)

शर्मिन्दा लड़की ने कागज़ खोलकर देखा तो उसमें लिखा था–अक्ल की अंधी, पिटवाएगी क्या? पीछे मेरी बीवी खड़ी थी। ये मेरा मोबाइल नंबर है। सेव कर ले। फोन पर बात करेंगे, और हाँ, I LOVE YOU TOO

Moral : Men will be men

कार्ड खो जाए तो

अगर आपका आधार कार्ड खो गया है तो सबसे पहले **UIDAI** कॉन्टैक्ट सेंटर में संपर्क करें। इसके लिए टोल फ्री नंबर

1800-300-1947

पर कॉल करें।

किसी आधार एनरोलमेंट सेंटर पर जाकर भी आप खोए हुए कार्ड को दोबारा पाने के लिए बोल सकते हैं। **appointments.uidai.gov./in/easearch.aspx** पर जाकर आप अपने नजदीक सेंटर का पता लगा सकते हैं।

संकलन : **शिखा वर्मा** हाथरस, (यू.पी.)

सम्पर्क करें : निशुल्क

मधुर संगीतमय *सुन्दर–काण्ड पाठ* के लिए

तारा मण्डल

ताराचन्द वर्मा

फोन : 9278611626

SHOP
011-0755-4289191

MOHAN VERMA
09202200200

VIVEK JEWELLERS

15, B.D.A. Complex, 9-A, Saket Nagar
Bhopal

मो: 9905226168 (Mahendar Pradsad)

श्री बर्तन भण्डार

सरैया गंज, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार)-842001
सभी प्रकार के पीतल, तांबा, एल्यूमिनियम,
फुल एवं स्टील आदि के बर्तनों के थोक एवं फुटकर विक्रेता

Shop : 011-22096836
Mob. : 98717655693, 999985961

N.R. TRADERS

Deals In : All Kinds Of Mattel Steel Polishing Material, Abrasives Belts of All Companies, Flap Wheels, Luster, Buff, Reubberizes Wheel, Chemical & All Hardware Goods Etc.

Specialist in : Grinding & Polishing Buffs.
46/3-B, Main Road East Azad Nagar, Krishna Nagar,
Delhi-110051 (India)

हस्तशिल्प श्री पुरूषोत्तम दास जी के द्वारा हुमायुँ मकबरा का गुम्बद का निर्माण का चित्र

जय बाबा जिन्दा की

Mob. : 9811846807

MEENU BOUTIQUE

Specialist in : Ladies Suit, Baby Suit, Blouse, Lehenga Cholly.

All Kinds of Fancy Dresses and Altration Work.

33, J & K BLOCK, LAXMI NAGAR, DELHI-110092.

Shop : 011-23234723, 23230919, 23232893
Resi. : 011-23233362
Mob.: 9911117480 (Lala Harswroop)
9811073054 (Mahesh Verma)

MAHESH METAL WORKS

Dealers in : Aluminium Sections

25, Raghu Shree Market, Ajmeri Gate,
Delhi-110006 (India)

LALA HARSWROOP
Mob.: 9911117480

KALYAN DAS BABU RAM

WHOLESALE DEALERS IN
ALUMINIUM SHEETS, COILS
EXTRUDED SECTIONS & ETC.

9, RAGHU SHREE MARKET,
AJMERI GATE, DELHI-110006

BOOK-POST

श्रीमान् ________________________

____

____

प्रेषक :
श्री सेवाराम अमर (अध्यक्ष)
ए–18, गुरुरामदास नगर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092
फोन : 011-22411774 (R) 9717553592 (M)

अखिल भारतीय हैहयवंशीय क्षत्रिय केन्द्रीय संचालन समिति (प०) के लिए श्री सेवाराम अमर ए–18, गुरुरामदास नगर लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092, द्वारा प्राकाशित एवं अनुकरण युक्ति ग्राफिक्स, ए–115, वकील चैम्बर, शकरपुर, दिल्ली–92 द्वारा परिकल्पित मुद्रक श्री राय बहादुर प्रसाद एवं सम्पादाक श्री सेवाराम अमर, RNI पंजी. संख्या–61438/95